हिन्दी दैनिक

लखनऊ जंक्शन

RNI NO.-UPHIN/2015/64743 Email-lkojunction@gmail.com

वर्ष: 11 अंक: 141 लखनऊ, रविवार 11 जनवरी 2026 पृष्ठ: 04 मूल्य: 01 रूपये

माघ मेले में मुख्यमंत्री योगी ने उठाया बांग्लादेश का मुद्दा

कहा- लगता है किसी ने फेविकोल लगा दिया

एजेंसी

प्रयागराज। मुख्यमंत्री योगी ने धर्मनिरपेक्षता के नाम पर राजनीति करने वालों पर निशाना साधते हुए शनिवार को कहा कि बांग्लादेश की घटनाओं पर इनके मुंह बंद हैं। मुख्यमंत्री यहां माघ मेला क्षेत्र में जगद्गुरु रामानंदाचार्य जी महाराज के 726वें प्राकट्य उत्सव को संबोधित कर रहे थे। संत समाज के महत्व को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि यह पूरे समाज को जोड़ने का कार्य करता है और जब संत समाज एक मंच पर आकर उद्घोष करता है तो उसका परिणाम भी सामने आता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि अयोध्या में भव्य राम मंदिर का निर्माण इसका उदाहरण है, जो पूज्य संतों की साधना और एकता से ही हुआ और जिसे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मूर्त रूप दिया। मुख्यमंत्री ने कहा, ''देश की आजादी के बाद कई प्रधानमंत्री हुए और सभी ने देश के विकास के बारे में सोचा, लेकिन भारत की मूल आत्मा को सम्मान मिलना चाहिए और अयोध्या में रामलला विराजमान हों, यह भाव केवल प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के भीतर था, जिन्होंने इसे साकार किया।'' योगी आदित्यनाथ ने कहा, ''मोदी पहले ऐसे प्रधानमंत्री हैं जो राम मंदिर में दर्शन करने गए, राम मंदिर के शिलान्यास में शामिल हुए, प्राण–प्रतिष्ठा समारोह में भी उपस्थित रहे और मंदिर निर्माण पूर्ण होने के बाद शुभ मुहूर्त में सनातन धर्म की ध्वज–पताका के आरोहण में भी भागीदार बने।'धर्मनिरपेक्षता के नाम पर राजनीति करने वालों पर निशाना साधते हुए मुख्यमंत्री ने कहा, ''इन लोगों का बांग्लादेश की घटना पर मुंह बंद है। इनके मुंह से एक भी शब्द नहीं निकल रहा है। ऐसा लगता है कि किसी ने इनके मुंह पर फेवीकोल चिपका दिया है। उन्होंने कहा, ''ऐसे लोगों द्वारा बांग्लादेश की घटनाओं को लेकर कोई कैंडल मार्च नहीं निकाला जा रहा है। यह हम सबके लिए एक चेतावनी भी है।'' गंगा की निर्मलता का उल्लेख करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि त्रिवेणी में स्नान की दिव्य अनुभूति हो रही है। उन्होंने कहा, ''मैंने भी यहां आकर सबसे पहले त्रिवेणी में डुबकी लगाकर मां गंगा के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। कितना पावन जल है। आज से आठ–दस वर्ष पहले क्या इतना निर्मल जल उपलब्ध हो पाता था?'' उन्होंने कहा, ''जब रामभक्त और गंगाभक्त देश की सत्ता में होता है, तभी ऐसे दिव्य अवसर प्राप्त होते हैं।''मुख्यमंत्री ने कहा, ''नमामि गंगे अभियान के माध्यम से प्रधानमंत्री मोदी ने गंगा के प्रति कृतज्ञता प्रकट की है और भारत माता का सच्चा सपूत ही ऐसा कार्य कर सकता है।'' उन्होंने कहा कि यहां स्नान करने वाला प्रत्येक श्रद्धालु प्रधानमंत्री को आशीर्वाद दे रहा है। विपक्षी नेताओं का नाम लिए बिना मुख्यमंत्री ने कहा कि जो लोग आज भी समाज को बांटने का कार्य कर रहे हैं, वे कभी किसी के हितैषी नहीं हो सकते। उन्होंने कहा कि जब ऐसे लोगों को सत्ता में रहने का अवसर मिला, तब वे केवल अपने परिवार के बारे में सोचते थे और उससे आगे उनकी दृष्टि नहीं थी। उन्होंने कहा, ''आज सत्ता से बाहर होने पर वे तरह–तरह के नारे दे रहे हैं, लेकिन यह वास्तविकता नहीं है।'' मुख्यमंत्री ने आरोप, ''जब भी उन्हें मौका मिलेगा, वे पहचान का संकट खड़ा करेंगे, अराजकता फैलाएंगे, सनातन धर्म पर प्रहार करेंगे और दंगों की आड़ में समाज को झुलसाने का प्रयास करेंगे। किसी भी स्थिति में इसकी पुनरावृत्ति नहीं होने दी जानी चाहिए।''कार्यक्रम में स्वामी राम दिनेशाचार्य जी महाराज, रामानुजाचार्य जी महाराज, राघवाचार्य जी महाराज, सतुआ बाबा महाराज, परमार्थ निकेतन के चिदानंद सरस्वती, दिगंबर अखाड़ा के वैष्णव दास जी महाराज प्रदेश के जलशक्ति मंत्री स्वतंत्र देव सिंह, मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी, पूर्व मंत्री सिद्धार्थ नाथ सिंह सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

सीएम योगी ने किया 'संगम स्नान'

प्रयागराज में चल रहे माघ मेले में पहुंच मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने आध्यात्मिक कार्यक्रमों में की सहभागिता

मां गंगा का किया पूजन, बड़े हनुमान जी के चरणों में झुकाया शीश, यमुना नदी में कलरव कर रहे पक्षियों को दाना भी खिलाया

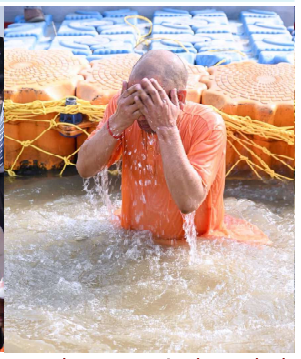

बीएनई

प्रयागराज। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शनिवार को प्रयागराज दौरे पर रहे। यहां उन्होंने विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रमों में हिस्सा लिया। मुख्यमंत्री ने 'संगम स्नान' किया। त्रिवेणी संगम का पूजन–अर्चन किया व मां गंगा की आरती उतारी। मुख्यमंत्री ने बड़े हनुमान मंदिर पहुंचकर 'संकट मोचक' के चरणों में शीश झुकाया। मुख्यमंत्री ने आमजन का अभिवादन भी स्वीकार किया।

सीएम योगी ने संगम नोज पर किया स्नान, मां गंगा की आरती भी उतारी

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ माघ मेले में पहुंचे। वह वीआईपी घाट से बोट में बैठकर संगम नोज पहुंचे। उन्होंने बोट से ही यमुना नदी में कलरव कर रहे पक्षियों को दाना भी खिलाया। मुख्यमंत्री ने संगम नोज पर पहुंचकर माघ मास में पवित्र स्नान किया, फिर विधिवत पूजन–अर्चन कर मां गंगा की आरती उतारी। उन्होंने मां गंगा के चरणों में शीश झुकाकर माघ मेले की सफलता की कामना की। सीएम बोट में ही बैठकर निरीक्षण करते हुए वापस आए। इस दौरान मुख्यमंत्री ने आमजन का अभिवादन भी किया।

बड़े हनुमान जी के चरणों में झुकाया शीश

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हनुमान कॉरिडोर का भी निरीक्षण किया। सीएम यहां बड़े हनुमान मंदिर भी गए। उन्होंने हनुमान जी के चरणों के समक्ष बैठकर दर्शन–पूजन कर आरती उतारी और विधि–विधान से पूजा की। धार्मिक कार्यक्रमों में संतोषाचार्य जी महाराज उर्फ 'सतुआ बाबा', कैबिनेट मंत्री स्वतंत्र देव सिंह व नंदगोपाल गुप्त 'नंदी', विधायक सिद्धार्थनाथ सिंह, हर्षवर्धन वाजपेयी तथा पूर्व सांसद विनोद सोनकर आदि मौजूद रहे।

तुर्कमान गेट पथराव मामला, दिल्ली पुलिस ने की तीन और लोगों की गिरफ्तारी, अब तक 16 लोग गिरफ्तार

एजेंसी

नयी दिल्ली। दिल्ली पुलिस ने तुर्कमान गेट इलाके में हुई पथराव की घटना के सिलसिले में तीन और लोगों को गिरफ्तार किया है। इसके साथ ही गिरफ्तार लोगों की संख्या बढ़कर 16 हो गई है। एक अधिकारी ने शनिवार को यह जानकारी दी। पुलिस ने जिन लोगों को गिरफ्तार किया है, उनके नाम मोहम्मद नावेद (44), मोहम्मद फैज (20), मोहम्मद उबैदुल्लाह (23), मोहम्मद आरिब (25), मोहम्मद काशिफ (25), मोहम्मद कैफ (23), मोहम्मद अदनान (37), समीर हुसैन (40), मोहम्मद अतहर (20), शहनवाज आलम (55), मोहम्मद इमरान (28), मोहम्मद इमरान उर्फ राजू (36), मोहम्मद अफ्फान (20), मोहम्मद आदिल (20), मोहम्मद आमिर हमजा (22) और मोहम्मद उबैदुल्लाह (26) हैं। अतिरिक्त पुलिस आयुक्त (मध्य) निधिन वाल्सन ने कहा, ''शुक्रवार रात हमने पथराव में शामिल तीन लोगों

को गिरफ्तार किया। अब तक कुल 16 लोगों की गिरफ्तारी हो चुकी है। जांच अभी जारी है।'' कानून–व्यवस्था बनाए रखने के लिए संवेदनशील इलाकों में बड़ी संख्या में पुलिस और अर्धसैनिक बल तैनात किए गए हैं। पुलिस ड्रोन से निगरानी और सीसीटीवी कैमरों से भी कड़ी नजर रखे हुए है। अधिकारियों ने कहा कि स्थिति शांतिपूर्ण और नियंत्रण में है। जांच के दौरान पुलिस ने 10 सोशल मीडिया 'इन्फ्लुएंसर्स' की पहचान की है, जिन पर घटना से जुड़ी गलत या अपुष्ट जानकारी देने का आरोप है। अधिकारियों ने बताया कि एक 'इन्फ्लुएंसर' एमन रिजवी को पूछताछ के लिए बुलाया गया था, लेकिन वह अभी तक पेश नहीं हुई है। हालांकि, रिजवी ने एक न्यूज एजेंसी से कहा कि उन्हें अब तक पुलिस की ओर से कोई समन नहीं मिला है। उन्होंने कहा, ''घटना छह जनवरी को रात करीब 12:30 बजे हुई थी।

जयपुर में शाह ने 9000 कॉन्स्टेबल को नियुक्ति पत्र दिए, बोले इनको सिफारिश नहीं, योग्यता से नियुक्ति मिली

एजेंसी

जोधपुर। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने जयपुर में 9000 नव नियुक्त कॉन्स्टेबल को नियुक्ति पत्र दिए। राजस्थान पुलिस अकादमी में आयोजित कार्यक्रम में शाह ने राम राम से भाषण की शुरुआत की। उन्होंने कहा आज 9000 कॉन्स्टेबलों को किसी सिफारिश नहीं अपनी योग्यता से नियुक्ति मिली है। कोई राज्य तभी आगे आ सकता है जब नियुक्ति पारदर्शिता से की हो। भजनलाल ने कांग्रेस सरकार का पेपर लीक का सिलसिला खत्म कर उससे निजात दिलाई है। इस दौरान चूरू के रतन नगर पुलिस थाने को सर्वश्रेष्ठ थाने का पुरस्कार मिला। इससे पहले जोधपुर में केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने कहा माहेश्वरी समाज जॉब सीकर नहीं रहा, जॉब क्रिएटर रहा है। ऐसे ही सदियों तक यह समाज देश की सेवा करता रहे। राम मंदिर पर पुस्तक लिख रहा युवक मेरे पास आया। मैंने उससे पूछा कि तुम्हारे पास क्या जानकारी है? उसने बताया कि आजादी के बाद राम मंदिर के लिए सबसे पहले प्राणों की आहूति देने वाले दोनों भाई माहेश्वरी समाज से थे। अमित शाह ने कहा कि देश के सांस्कृति पुनर्जागरण में भी माहेश्वरी समाज का योगदान बहुत बड़ा है। माहेश्वरी समाज के हाथ में तलवार भी अच्छी लगती है, तराजू भी। समाज के दिए हुए भामाशाहों की सूची बनाएंगे तो कई पेज भर जाएंगे। शनिवार को शाह पॉलिटेक्निक कॉलेज मैदान में चल रहे माहेश्वरी ग्लोबल कन्वेंशन को संबोधित कर रहे थे। केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा देश को हर क्षेत्र में सर्वप्रथम लाने के लिए तीन चीजें जरूरी हैं, जिन्हें माहेश्वरी समाज कर सकता है। पहली, जो उत्पादन करते हैं तो वो करिए, लेकिन साथ में ऐसी चीजों का उत्पादन भी करें, जो भारत में नहीं बनती है। दूसरी, स्वदेशी। जितना हो सके, उतना स्वदेशी चीजों का उपयोग करें। यह तय कर लें कि मेरे देश में बनी है, उसी चीज का व्यापार करूंगा। स्वदेशी के साथ स्वभाषा का भी उपयोग करें। जब मुगलों के साथ लड़ते थे तो राजा–महाराजा के खजाने भरने का काम माहेश्वरी समाज ने किया। जब अंग्रेजों से लड़े तो महात्मा गांधी की लड़ाई का खर्च माहेश्वरी समाज के सेठों ने उठाया है। जब देश आजाद हुआ तो उद्योग के क्षेत्र में माहेश्वरी समाज ने पीछे मुड़कर कभी नहीं देखा। अमित शाह ने कहा कि चाहे उत्पादन का क्षेत्र हो, चाहे टेक्नोलॉजी को अपनाना हो, माहेश्वरी समाज ने प्रगतिशील समाज का परिचय दिया है। हमारे गुजरात में कहावत है कि जहां न पहुंचे रेलगाड़ी, वहां पहुंच जाए मारवाड़ी। अमित शाह ने कहा कि जब समाज के आयोजन होते हैं तो कई प्रगतिशील लोग टीका–टिप्पणी करते हैं, मैंने ऐसी कई टिप्पणी झेली है। हमारे यहां समाजों के ऐसे महाकुंभ भारत को मजबूत करते हैं, भारत को विघटित नहीं करते। यदि हर समाज अपने गरीब भाई–बहनों की देखभाल स्वयं कर ले तो भारत से गरीबी मिट जाए। यदि हर समाज आत्मनिर्भर बन जाए तो पूरा भारत आत्मनिर्भर बन जाएगा।

फिर हुई राम मंदिर के सुरक्षा में चूक, परिसर में कश्मीरी व्यक्ति पढ़ने लगा नमाज!

सुरक्षा कर्मियों ने हिरासत में लिया

मनोज श्रीवास्तव

लखनऊ। अयोध्या के राम जन्मभूमि परिसर में शनिवार की सुबह श्रद्धालु बन कर तीन कश्मीरी घुसे। भगवान श्रीराम का दर्शन करने के बाद निकास द्वारा से बाहर होते ही सीता रसोई के पास एक व्यक्ति नमाज पढ़ने लगा। सुरक्षाकर्मियों ने तुरंत उन्हें रोका तो वह धार्मिक नारे लगाने लगे। जिन्हें सुरक्षाकर्मियों ने तुरंत दबोच लिया। पकड़े गए लोगों में एक युवक, एक 56 साल का अधेड़ व्यक्ति और 1 युवती शामिल है। इन लोगों ने खुद को कश्मीरी बताया है।प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, तीनों संदिग्ध हरकतें कर रहे थे। सूत्रों के अनुसार तीनों से राम जन्मभूमि पुलिस चौकी में पूछताछ की जा रही थी, लेकिन बाद में कहीं और ले जाकर पूछ–ताछ की जा रही है। ये लोग वो अयोध्या क्यों आए थे? कश्मीर में उनकी गतिविधियों, कॉल डिटेल, सोशल साइट्स पर उनकी सक्रियता की गहन पड़ताल से ही यह निश्चित होगा कि यह जज्बात में ऐसी हरकत किये हैं, या किसी आतंकी घटना के पूर्व की यह रेकी है। सभी ऐंगल पर भी जांच हो रही है। अंतिम जानकारी तक राम मंदिर परिसर में नमाज पढ़ने की कोशिश करने वाले एक व्यक्ति को पुलिस हिरासत में लिया गया है। कश्मीर के रहने वाले व्यक्ति की पहचान अबू अहमद शेख निवासी शोपिया कश्मीर का बताया जा रहा है। सूत्रों के अनुसार पुलिस ने तीन कश्मीरियों एक युवती व दो पुरुषों को हिरासत में लिया है। सुबह के दर्शन के लिये यह लोग श्रद्धालु बन कर घुसे थे। सीता रसोई के पास अबू अहमद जब नमाज पढ़ने लगा तो श्रद्धालुओं की दृष्टि पड़ी। उन्होंने वहां तैनात सुरक्षा बल के जवानों को इसकी सूचना दी। जिसके बाद उसे पकड़ लिया गया। जानकारी के अनुसार राम मंदिर के एक्जिट गेट के बाहर ये युवक नमाज पढ़ रहा था। एक्जिट गेट के बाहर नमाज पढ़ने की सूचना के बाद वहां पर खलबली मच गई। पुलिस की टीम सीसीटीवी फुटेज को खंगाल रही है। पकड़े गए कश्मीरी मूल के व्यक्ति अबू अहमद शेख से पूछताछ की जारी है। जानकारी के मुताबिक उसके साथ दो और लोग थे। एक अन्य सूत्र के अनुसार मंदिर परिसर में तैनात वाचर ने इन संदिग्धों के बारे में सूचना दी थी। घटना की सूचना पर खुफिया एजेंसियां, स्थानीय पुलिस और सीनियर प्रशासनिक अधिकारी सक्रिय हैं। फिलहाल पुलिस प्रथम दृष्टया यही जानना चाहती है कि यहाँ घुसने के पीछे उसका क्या इरादा था। उसके इरादे की गहनता से जांच की जा रही है।बता दें कि अयोध्या राम मंदिर पर पहले भी हमला हो चुका है।आतंकी धमकियों की तो संख्या बहुत है।

प्रदेश में ढाई करोड़ से ज्यादा और मतदाताओं को नोटिस देने की तैयारी, आज पढ़ी जाएगी मतदाता सूची

लखनऊ ब्यूरो

लखनऊ। यूपी में ढाई करोड़ से ज्यादा और मतदाताओं को नोटिस देने की तैयारी है। विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण (एसआईआर) के दौरान खेल करते हुए उन्होंने वर्ष 2003 की मतदाता सूची से मिलान (मैपिंग) के लिए किसी और को अपना पिता दिखा दिया। इतना ही नहीं तमाम मतदाता ऐसे हैं, जिन्होंने मैपिंग वाले कॉलम में संबंध तो पिता का बताया है, लेकिन नाम माता का लिखा है। इस तरह की तमाम त्रुटियों को असंगत डाटा में रखते हुए चुनाव आयोग ने इन्हें भी नोटिस भेजने का फैसला किया है। उदाहरण के तौर पर 27 अक्तूबर 2025 को फ्रीज की गई मतदाता सूची में मतदाता राकेश के पिता का नाम सुरेंद्र है, लेकिन उसने मैपिंग वर्ष 2003 के जिस ब्योरे से कराया है, उसमें मतदाता का नाम तो राकेश ही है, पर पिता का नाम राजेंद्र है। कई मतदाताओं ने तो उन नामों से भी मैपिंग करा दी है, जो काफी जरा भी मिलते–जुलते नहीं हैं। इसी तरह से पिता–पुत्र या दादा–पोते की उम्र में असमान्य तौर पर अंतर है। अधूरे नाम या नाम की स्पेलिंग में अंतर के मामले तो बहुत ही बड़ी संख्या में आए हैं। चुनाव आयोग के उच्चपदस्थ सूत्रों के मुताबिक, इस तरह की 7–8 तरह की असंगतियों (लॉजिकल डिस्क्रिपेंसी) को चिह्नित कर लिया गया है। इस तरह के लोगों की संख्या ढाई करोड़ से ज्यादा होने की

यूपी में एसआईआर

- प्रदेश की मतदाता सूची से कटे 2.89 करोड़ नाम
- 1.04 करोड़ मतदाताओं के नाम का 2003 की सूची से मिलान नहीं
- 6 फरवरी तक मांगे गए दावे और आपत्तियां

आशंका है। पहले चरण में उन 1.04 करोड़ मतदाताओं को दिए जाने वाले नोटिस की सुनवाई होगी, जिन्होंने वर्ष 2003 की सूची से मैपिंग करवाते हुए अपना डाटा नहीं भरा है। अगले चरण में इन ढाई करोड़ से अधिक मतदाताओं को भी नोटिस जारी होगा। नोटिस चरण, दावों और आपत्तियों के निस्तारण के लिए आयोग के पास 27 फरवरी तक का समय है। आयोग के सूत्र बताते हैं कि इनके मामले में फरवरी में विचार होगा। पूरे देश में इस तरह की असंगति वाले मतदाताओं की संख्या करीब 20 प्रतिशत बताई जा रही है, लेकिन यूपी में इनकी संख्या इससे ज्यादा होने की ही आशंका जताई गई है। सभी बूथों पर आज पढ़ी जाएगी मसौदा सूची प्रदेश के सभी बूथों पर 11 जनवरी को बीएलओ मसौदा मतदाता सूची को पढ़ेंगे। सूची से संबंधित दावे और आपत्तियां 6 फरवरी तक दी जा सकती है। मतदाता बनने की अर्हता भारत की नागरिकता है। साथ ही उत्तर प्रदेश में सामान्य निवास कर रहे हों।

ओडिशा के राउरकेला में विमान हादसा, पायलट समेत 6 लोग थे सवार

एजेंसी

राउरकेला। ओडिशा के राउरकेला हवाई पट्टी से लगभग नौ किलोमीटर दूर एक छोटे विमान की इमरजेंसी लैंडिंग कराई गई है। उड़ान के दौरान तकनीकी खराबी का पता चलने के बाद लैंडिंग कराई गई है। पायलट को गंभीर चोटें आई हैं। उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है। कुल छह लोग घायल हुए हैं। तत्काल बचाव अभियान शुरू किया गया, जिससे सभी को समय रहते सुरक्षित बाहर निकाला जा सका। अधिकारी घटना की जांच कर रहे हैं। भुवनेश्वर से राउरकेला जा रहा 9 सीटों वाला यह विमान, कथित तौर पर टेक–ऑफ के लगभग 10 किलोमीटर बाद दुर्घटनाग्रस्त हो गया।

विमान को दोपहर 1.15 बजे राउरकेला में लैंड करना था, लेकिन इसके बजाय उसने जल्दी के पास इमरजेंसी लैंडिंग की। विमान में चार यात्री और दो क्रू मेंबर सवार थे, जिनमें कैप्टन नवीन कडंगा और कैप्टन तरुण श्रीवास्तव शामिल हैं। अधिकारियों ने पुष्टि की कि इस घटना में छह लोग घायल हुए हैं। सभी को सुरक्षित निकाल लिया गया और इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया। क्रैश होने के बाद बचाव अभियान में तीन फायर ब्रिगेड की टीमें लगी हुई थीं। जैसे ही हादसे की जानकारी मिली तुरंत बचाव कार्य शुरू कर दिया गया। स्थानीय लोगों और पुलिस ने भी बचाव अभियान में मदद की। यही वजह है कि समय रहते लोगों को बाहर निकाल लिया गया। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि जाल्दा के पास नीचे आने से पहले विमान ने इमरजेंसी लैंडिंग की कोशिश की। यही वजह है कि लोग डर गए। प्लेन काफी नीचे आ गया था। लोगों की मानें तो इतने नीचे प्लेन उन्होंने इससे पहले नहीं देखा गया था। देखते ही देखते प्लेन आगे जाकर क्रैश हो गया।

संपादकीय

प्रवासियों और शरणार्थियों को खतरा क्यों मान रही है दुनिया ?

नए साल में भी दुनिया की तस्वीर स्याह ही नजर आती है। बढ़ते संघर्ष और उभरता सत्तावाद संस्थाओं को कमजोर कर रहे हैं। बढ़ती विषमता आर्थिक असुरक्षा को गहरा रही है। लेकिन सबसे अधिक हतोत्साहित करने वाली घटना 'अदर्स' यानी दूसरों के प्रति बढ़ती नफरत है। दुनिया के तमाम देशों में राजनेता प्रवासियों और शरणार्थियों को एक खतरे के रूप में पेश कर रहे हैं। यह स्थिति डब्ल्यूएच ऑडेन की कविता 'रिफ्यूजी ब्लूज' की याद दिलाती है। द्वितीय विश्व युद्ध की पूर्वसंध्या पर लिखी इस कविता में एक सार्वजनिक सभा में वक्ता चेतावनी देता है कि 'अगर हम उन्हें भीतर आने देंगे, तो वे हमारी रोजी–रोटी छीन लेंगे।' इस 'जेनोफोबिया' का उभार किसी शून्य में नहीं हो रहा है। यह एक गहरे संरचनात्मक बदलाव से प्रेरित है। हम भूल जाते हैं कि राष्ट्र–राज्य एक अपेक्षाकृत नया विचार है, जो उस समय उभरा था जब यात्राएं धीमी और सीमित हुआ करती थीं। उस दौर में दुनिया को अलग–अलग समुदायों के समूह के रूप में देखना तार्किक था। तब हर समुदाय अपने सदस्यों के कल्याण के लिए स्वयं जिम्मेदार था। इन इकाइयों को प्रभावी ढंग से संचालित करने के लिए एक साझा पहचान आवश्यक थी और इसी के लिए राष्ट्रवाद उभरा। लेकिन वैश्वीकरण ने इस व्यवस्था पर लगातार दबाव डाला है। वस्तुओं, पूंजी, सूचनाओं और लोगों की अपेक्षाकृत मुक्त आवाजाही– और उसके साथ डिजिटल क्रांति– ने कंपनियों, श्रमिकों और उपभोक्ताओं को सीमाओं के पार जुड़ने में सक्षम बना दिया है। विडंबना यह है कि यही बात आज के धुर–राष्ट्रवाद को हवा दे रही है। यह उस मॉडल को पुनर्जीवित करने का प्रयास है, जिसे दुनिया पीछे छोड़ चुकी है। हम इसे पहले भी देख चुके हैं। नस्लीय श्रेष्ठता के दावे किसी जमाने में सामान्य माने जाते थे, लेकिन आज वे त्याज्य समझे जाते हैं। लेकिन आज भी लोगों का अपने–अपने देशों को दुनिया का सर्वश्रेष्ठ बताना आम है, जबकि समय के साथ राष्ट्रीय सर्वोच्चता के ऐसे दावे भी उतने ही असभ्य और अक्षम्य प्रतीत होंगे। इस बदलाव की रूपरेखाएं दशकों पहले ही दिखाई देने लगी थीं। 1992 में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'द ट्वाइलाइट ऑफ सॉवरेन्टी' में वॉल्टर रिस्टन ने भविष्यवाणी की थी कि राष्ट्रीय सरकारें धीरे–धीरे अपनी प्रासंगिकता खो देंगी। उनके अनुसार, हमारा सामूहिक भविष्य लगातार उन लोगों के हाथों में जा रहा है, जो दूरसंचार और कंप्यूटरों के जरिये पूरे ग्रह को जोड़ रहे हैं और उन बैंकरों के हाथों में भी, जो वैश्विक इलेक्ट्रॉनिक ढांचे के माध्यम से पूंजी का लेनदेन करते हैं। जैसे एक न्यायपूर्ण दुनिया के निर्माण के लिए दासता और नस्लीय श्रेष्ठता की अस्वीकृति आवश्यक थी, उसी तरह आने वाले समय में राष्ट्रवाद के अहंकार को त्यागना भी अनिवार्य हो सकता है। रबींद्रनाथ ठाकुर बार–बार सीमाओं से मुक्त दुनिया की कल्पना करते रहे थे। 1917 के एक निबंध में उन्होंने तर्क दिया था कि भले ही राष्ट्र–राज्य एक व्यावहारिक आवश्यकता बना रहे, लेकिन हमें अंततः उस दिन की आकांक्षा करनी चाहिए जब हमारी प्राथमिक पहचान केवल 'मानव' हो। पं. नेहरू ने भी इस दृष्टि की शक्ति को पहचाना था। लेकिन भले ही हम सार्वभौमिकता के नैतिक पक्ष को स्वीकार कर लें और यह मान लें कि वैश्विक अर्थव्यवस्था कितनी गहराई से आपस में जुड़ चुकी है, फिर भी सवाल बना रहता है कि क्या सीमाओं से मुक्त दुनिया वास्तव में संभव है? आखिरकार, राष्ट्रवाद ने आगे बढ़ने और उत्कृष्टता हासिल करने की एक शक्तिशाली प्रेरणा भी तो देशों को दी है, जिसने विकास और इनोवेशन को गति देने में मदद की है। तीसरी शताब्दी ईसा–पूर्व के यूनानी स्टोइक दार्शनिक क्रिसिप्पस ऑफ सोली एक उपयोगी दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। अत्यंत सादगीपूर्ण जीवन जीने वाले क्रिसिप्पस नैतिक जीवन को समझाने के लिए प्रतिस्पर्धी खेलों का रूपक इस्तेमाल करते थे। अमेरिकी दार्शनिक टैड ब्रेनन के शब्दों में, वे धक्का–मुक्की रहित नैतिकता के पक्षधर थे, जिसका अर्थ यह है कि प्रतिस्पर्धी जीतने का प्रयास करें, लेकिन केवल खेल के नियमों के भीतर रहकर। ऐसी परिस्थितियों में प्रतिस्पर्धा– मित्रता, सहयोग और साझा उद्देश्य के साथ सह–अस्तित्व में रह सकती है। निस्संदेह, सीमाहीन दुनिया अभी दूर का सपना है। फिलहाल, हम जो कर सकते हैं, वह है मौजूदा सुपरनेशनल संस्थाओं को मजबूत करना– जैसे संयुक्त राष्ट्र, ब्रेटन वुड्स संस्थान और अंतरराष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय। ऐसे समय में, जब राष्ट्रवाद अंतरराष्ट्रीय सहयोग की नींव को कमजोर कर रहा है, इन संस्थाओं की मजबूती अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमें एक ऐसी दुनिया की आकांक्षा को संजोना होगा, जहां किसी को भी 'दूसरा' न माना जाए, और जहां शरणार्थियों तथा प्रवासियों को हमारी रोजी–रोटी छीनने वाले अमानवीय खतरों के रूप में चित्रित न किया जाए।

वेनेजुएला पर हमला अमेरिका की दादागिरी कंही तीसरा विश्व युद्ध न करा दे

–सुरेश सिंह बैस शाश्वत

अमेरिका द्वारा वेनेजुएला पर सारे अंतरराष्ट्रीय नियमों को धता बताते हुए जो अलोकतांत्रिक कार्यवाही की गई है वह निश्चय है तृतीय विश्व युद्ध को आमंत्रित करता नजर आ रहा है। यह घटना ऐसी विलक्षण घटना है जो दुनिया के देशों को दो खेमों में बांटता स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है। एक तरफ अमेरिका और उसके हित चिंतक देश है तो दूसरी ओर पूरा यूरोप और नाटो के देश, ट्रंप की कार्रवाई से भृकुटी तान चुके हैं, डेनमार्क ने तो यहां तक कह दिया है कि अगर ऐसे ही ग्रीनलैंड को अमेरिका द्वारा हथियाने की हिमाकत की गई तो यह बहुत बुरा परिणाम देने वाला साबित होगा। दूसरी और रूस और चीन भी अमेरिका के इस कार्रवाई की तीखी निंदा कर चुके हैं। केवल भारत ही एक ऐसा शक्तिशाली देश है जो इन सभी घटनाओं पर संयत रूप से बयान और नजर रख रहा है। भारत का स्पष्ट संदेश है किष् सर्वजन हिताय सर्वहित सुखायष् सबका साथ सबका विश्वास यही नीति वैश्विक रूप से भारत चाहता है। वह किसी खेमे में न जाकर शांतिपूर्ण हल की बात कह रहा है। वहीं वेनेजुएला पर अमेरिका के संभावित या अप्रत्यक्ष हमलों की चर्चा जब भी होती है, तो सबसे पहले दिमाग में जो शब्द उभरता है वह है–तेल। यह कोई संयोग नहीं है। वेनेजुएला वह देश है जिसकी धरती के नीचे दुनिया के सबसे बड़े सिद्ध आरक्षित तेल भंडार मौजूद हैं, और यही संसाधन उसे समृद्धि के साथ–साथ अभिशाप भी देता है। अमेरिका, जो स्वयं को लोकतंत्र और मानवाधिकारों का वैश्विक रक्षक घोषित करता है, वेनेजुएला के मामले में बार–बार आक्रामक रुख अपनाता रहा है। आधिकारिक बयान हमेशा यही कहते हैं कि वेनेजुएला में लोकतंत्र खतरे में है, तानाशाही है, जनता पीड़ित है, लेकिन इन तर्कों के पीछे छिपे आर्थिक और सामरिक हितों को नज़रअंदाज़ करना बौद्धिक बेईमानी होगी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की कार्यवाहियां विश्व में उथल–पुथल मचा रही है। सबको साथ लेकर चलने की बजाय केवल तानाशाही और निरंकुश ष्अमेरिका फर्स्टष् की नीति को रखते हुए जो वह अपने प्लानिंग कर रहे हैं वह अमेरिका के साथ साथ वैश्विक रूप से बहुत घातक साबित हो सकती है। ह्यूगो चावेज़ और बाद में निकोलस मादुरो की सरकारों ने जब तेल उद्योग का राष्ट्रीयकरण किया और अमेरिकी कंपनियों के वर्चस्व को चुनौती दी, तभी से वेनेजुएला अमेरिका की आँख की किरकिरी बन गया। अमेरिका की आदत रही है कि जो सरकारें उसके आर्थिक हितों के अनुकूल नहीं होतीं, उन्हें वह अलोकतांत्रिक घोषित कर देता है। वेनेजुएला में हालात सचमुच खराब हैं–महंगाई, बेरोज़गारी, पलायन और राजनीतिक दमन–लेकिन यह सवाल बार–बार उठता है कि क्या इन हालातों को सुधारने का एकमात्र अमेरिकी प्रतिबंधों की भी बड़ी भूमिका है। डोनाल्ड ट्रंप के राष्ट्रपति बनने के बाद यह पूरा मसला और अधिक कड़वा तथा असंयमित हो गया। ट्रंप की राजनीति गंभीर कूटनीति से ज़्यादा व्यक्तिगत अहंकार, आक्रामक भाषा और दिखावटी मर्दानगी पर टिकी रही। वेनेजुएला के मामले में भी उन्होंने वही किया। खुलेआम सैन्य हस्तक्षेप की धमकियाँ, सारे विकल्प खुले हैं जैसे बयान, और खुद को दुनिया का मालिक समझने वाला रवैया–यह सब ट्रंप की उसी ठरकी मानसिकता का विस्तार था जिसमें ताकत का प्रदर्शन ही समाधान माना जाता है। वे न तो लैटिन अमेरिका के इतिहास की जटिलताओं को समझना चाहते थे, न ही आम वेनेजुएलाई नागरिकों की पीड़ा से उन्हें कोई वास्तविक सरोकार था। उनके लिए वेनेजुएला एक ऐसा मंच था जहाँ वे घरेलू राजनीति के लिए सख़्त नेता बनने का तमगा हासिल कर सकते थे और तेल लॉबी को भी खुश रख सकते थे। ट्रंप प्रशासन के दौरान लगाए गए कड़े आर्थिक प्रतिबंधों ने वेनेजुएला की अर्थव्यवस्था की कमर तोड़ दी। तेल बेचने पर रोक, बैंकिंग व्यवस्था से बाहर करना और अंतरराष्ट्रीय लेन–देन को लगभग असंभव बना देना–यह सब बिना गोली चलाए युद्ध लड़ने जैसा था। इसके परिणामस्वरूप ष्सर. कार से ज़्यादा आम जनता प्रभावित हुई। दवाइयों की कमी, भोजन का संकट और जीवन स्तर में गिरावट ने यह सवाल और तीखा कर दिया कि क्या यह सब सच में लोकतंत्र लाने के लिए किया जा रहा है या फिर जनता को इतना तोड़ने के लिए कि सत्ता परिवर्तन अपने आप हो जाए। यह भी नहीं भूलना चाहिए कि वेनेजुएला केवल तेल का मामला नहीं है, बल्कि भू–राजनीति का भी अखाड़ा है। रूस और चीन जैसे देशों की बढ़ती मौजूदगी अमेरिका को असहज करती है। ट्रंप जैसे नेता के लिए यह असहजता और भी निजी हो जाती है, क्योंकि वे दुनिया को शतरंज की बिसात की तरह देखते हैं, जहाँ हर चाल शक्ति प्रदर्शन से जुड़ी होती है। ऐसे में वेनेजुएला पर सख़्ती दिखाना उनके लिए ष्अल्फ़ा लीडरष् बनने का आसान तरीका था। फिर भी, यह कहना कि अमेरिका का हर कदम सिर्फ़ तेल के लिए है, पूरी सच्चाई नहीं होगी, लेकिन यह भी उतना ही सच है कि अगर वेनेजुएला के पास तेल न होता, तो शायद उसे बचाने या सुधारने की इतनी बेचैनी अमेरिका को कभी न होती। ट्रंप की आक्रामक, आत्ममुग्ध और कई बार हास्यास्पद लगने वाली भूमिका ने इस पूरे संघर्ष को और अधिक खतरनाक बना दिया, जहाँ कूटनीति की जगह धमकी और संवाद की जगह दबाव ने ले ली। अंततः इस पूरी कहानी में सबसे दुखद पक्ष यह है कि सत्ता की इस वैश्विक खींचतान में वेनेजुएला का आम नागरिक पिसता है। उसके लिए यह अमेरिका बनाम मादुरो या ट्रंप बनाम समाजवाद का संघर्ष नहीं, बल्कि रोज़मर्रा की ज़िंदगी की लड़ाई है। वेनेजुएला पर अमेरिका की नीति, खासकर ट्रंप के दौर में, यह दिखाती है कि जब राजनीति में संसाधन, अहंकार और शक्ति की भूख मिल जाती है, तो लोकतंत्र और मानवाधिकार केवल भाषणों तक सीमित रह जाते हैं। निकोलस मादूरो की सत्ता फिलहाल जितनी कमजोर दिखती है, उतनी अस्थिर नहीं है। इसकी सबसे बड़ी वजह है सेना का समर्थन। जब तक वेनेजुएला की सेना मादूरो के साथ खड़ी है, तब तक किसी भी बाहरी या आंतरिक दबाव से सत्ता परिवर्तन होना बेहद कठिन है। विपक्ष बिखरा हुआ है, उसके पास न तो कोई सर्वमान्य नेतृत्व है और न ही जनता का वह जोश, जो किसी निर्णायक बदलाव को जन्म दे सके। हाल के वर्षों में मादूरो ने एक बात अच्छी तरह सीख ली है–सत्ता बचाने की कला। उन्होंने चुनावी प्रक्रिया पर पकड़ मज़बूत की, संस्थानों को अपने अनुकूल रखा और अमेरिका के दबाव के बावजूद रूस, चीन और ईरान जैसे देशों के साथ रिश्ते और गहरे किए। आर्थिक संकट के बीच भी उन्होंने सीमित स्तर पर बाज़ार को ढील देकर हालात को पूरी तरह विस्फोटक होने से रोका है। इसलिए निकट भविष्य में मादूरो का अचानक पतन संभव नहीं दिखता। हालाँकि इसका यह मतलब नहीं कि उनकी स्थिति मज़बूत है। जनता का असंतोष गहरा है, वैधता पर सवाल बने हुए हैं और अर्थव्यवस्था अब भी नाजुक है। मादूरो शायद सत्ता में बने रहें, लेकिन कमज़ोर, विवादित और अंतरराष्ट्रीय दबाव में घिरे हुए नेता के रूप में। अब सवाल अमेरिका का है। सीधा सैन्य हमला आज के दौर में अमेरिका के लिए न तो व्यावहारिक है और न ही राजनीतिक रूप से फायदेमंद। इराक और अफ़ग़ानिस्तान के अनुभवों ने यह साफ़ कर दिया है कि सैन्य दखल लंबे समय तक फँसने का रास्ता खोल देता है। इसलिए अमेरिका की रणनीति आगे भी प्रत्यक्ष युद्ध से बचते हुए अप्रत्यक्ष दबाव की ही रहेगी। सबसे पहला हथियार रहेगा– आर्थिक प्रतिबंध। अमेरिका इन्हें कभी कड़ा करेगा, कभी ढीला, ताकि मादूरो सरकार पर दबाव बना रहे और साथ ही बातचीत की गुंजाइश भी खुली रहे। हाल के संकेत बताते हैं कि अमेरिका ष्सब या कुछ नहींष् की नीति के बजाय सौदेबाज़ी की राह पर चल सकता है–जैसे चुनावी सुधारों या विपक्ष को कुछ जगह देने के बदले प्रतिबंधों में राहत। दूसरी रणनीति होगी राजनयिक अलगाव। अमेरिका लैटिन अमेरिकी देशों और यूरोपीय सहयोगियों के साथ मिलकर मादूरो सरकार को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर घेरने की कोशिश करता रहेगा, ताकि उसे वैध नेतृत्व के रूप में पूरी स्वीकृति न मिल सके। तीसरा और अहम पहलू है तेल। वैश्विक ऊर्जा बाज़ार में उतार–चढ़ाव के कारण अमेरिका पूरी तरह वेनेजुएला के तेल से मुँह नहीं मोड़ सकता। इसलिए भविष्य की अमेरिकी नीति दोहरी हो सकती है–एक तरफ मादूरो पर दबाव, दूसरी तरफ सीमित स्तर पर तेलसौदों की अनुमति, ताकि अपने आर्थिक हित भी सुरक्षित रखे जा सकें। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस पूरी रणनीतिक लड़ाई में स्पष्ट विजेता कोई नहीं दिखता। मादूरो सत्ता में रह सकते हैं, लेकिन स्थिरता और समृद्धि के बिना। अमेरिका दबाव बनाए रख सकता है, लेकिन मनचाहा सत्ता परिवर्तन सुनिश्चित नहीं कर सकता। और इस सबके बीच वेनेजुएला की आम जनता लगातार कीमत चुकाती रहेगी। संक्षेप में कहा जाए तो मादूरो का भविष्य निकट समय में सत्ता से बाहर होने का नहीं, बल्कि दबाव में टिके रहने का है, और अमेरिका की आगे की रणनीति खुले युद्ध की नहीं, बल्किलंबी और थकाने वाली घेराबंदी की होगी– जहाँ तेल, कूटनीति और प्रतिबंध तीनों साथ–साथ चलेंगे।

धरती के नीचे सोना ऊपर लोकतंत्र का शोर
तेल की खुशबू में लिपटा है सत्ता का हर एक दौर
वेनेजुएला रोता रहा ताकत चलती रही चाल
झंडों के पीछे छुपा हुआ तेल ही है असली बवाल।।

भारत–अमरीका व्यापार समझौते में इतना समय क्यों लग रहा है?

अजय श्रीवास्तव

व्यापार नीति नहीं, बल्कि सुरक्षा पर निर्भरता, वाशिंगटन की अन्य देशों के साथ इतनी तेजी से व्यवहार करने की वजह है और यही कारण है कि भारत अपनी स्थिति पर अड़ा हुआ है। भारत ने अभी तक अमरीका (यू.एस.) के साथ द्विपक्षीय व्यापार समझौता क्यों नहीं किया, जबकि दोनों देशों ने अन्य सांझेदारों के साथ तेजी से समझौते किए हैं? पिछले 4 वर्षों में ही भारत ने मॉरीशस, संयुक्त अरब अमीरात, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, ओमान, यूरोपीय मुक्त व्यापार संघ ब्लॉक, यूनाइटेड किंगडम (यू.के.) और इंडो–पैसिफिक इकोनॉमिक फ्रेमवर्क (आई.पी.ई.एफ.) के सदस्यों के साथ व्यापार समझौते संपन्न किए हैं, जिसमें अमरीका भी शामिल है। पिछले 6 महीनों में वाशिंगटन ने जापान, यूरोपीय संघ (ई.यू.), ब्रिटेन, दक्षिण कोरिया, थाईलैंड, वियतनाम और मलेशिया के साथ त्वरित व्यापार समझौते किए हैं। तो फिर भारत–अमरीका समझौते में इतना समय क्यों लग रहा है? इसके दो मुख्य कारण हैं– पहला, अमरीका के साथ तेजी से व्यापार समझौते करने वाले अधिकांश देश अपनी सुरक्षा के लिए वाशिंगटन पर काफी हद तक निर्भर हैं। जबकि भारत के साथ ऐसा नहीं है। दूसरा, अमरीका–भारत व्यापार वार्ता व्यापार से कहीं आगे बढ़कर वाशिंगटन के लिए महत्वपूर्ण रणनीतिक और नीतिगत क्षेत्रों तक फैली हुई है। ये दो कारक बातचीत को जटिल बनाते हैं और यही कारण है कि समझौता होने में उम्मीद से अधिक समय लग रहा है। उदाहरण के लिए, जापान और दक्षिण कोरिया अमरीका के औपचारिक संधि सहयोगी हैं और बड़ी संख्या में अमरीकी सैनिकों की मेजबानी करते हैं, विशेष रूप से उत्तर कोरिया और चीन से उत्पन्न खतरों को देखते हुए। यूरोप में भी यही पैटर्न देखने को मिलता है। उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) के माध्यम से ब्रिटेन अमरीका के सबसे करीबी रणनीतिक सांझेदारों में से एक बना हुआ है। ऐसे मामलों में, व्यापार वार्ताएं रणनीतिक गठबंधन से प्रभावित होने के कारण, अमरीकी मांगों के प्रति प्रतिरोध सीमित रहता है। दक्षिणपूर्व एशिया में भी ऐसी ही स्थिति देखने को मिलती है। पारस्परिक रक्षा संधि से बंधे फिलीपींस ने हाल के वर्षों में अमरीकी सैन्य पहुंच का विस्तार किया है। संधि के तहत सहयोगी देश थाईलैंड भी अमरीकी सुरक्षा ढांचे में गहराई से जुड़ा हुआ है। इन देशों के लिए व्यापार समझौते सुरक्षा निर्भरता पर आधारित एक व्यापक भू–राजनीतिक सौदे का हिस्सा हैं। भारत की स्थिति अलग है। यह अपनी सुरक्षा के लिए अमरीका पर निर्भर नहीं है और सैन्य दबाव के माध्यम से इस पर दबाव नहीं डाला जा सकता। यह रणनीतिक स्वायत्तता व्यापार वार्त्ताओं के स्वरूप को मौलिक रूप से बदल देती है। अमरीका–भारत व्यापार समझौते के लिए फरवरी 2025 में बातचीत शुरू हुई थी लेकिन वाशिंगटन भारत पर दबाव डाल रहा है कि वह विनियमन और प्रौद्योगिकी से लेकर ऊर्जा और भू–राजनीति तक के क्षेत्रों में अमरीकी हितों के अनुरूप प्रमुख घरेलू नीतियों को फिर से आकार दे। अमरीका चाहता है कि भारत अमरीकी तेल और रक्षा उपकरण अधिक खरीदे, डाटा और डिजिटल नियमों में ढील दे और ब्रिक्स सांझेदारों, विशेष रूप से रूस और चीन से दूरी बनाए रखे। इस बीच, भारत ने पहले ही महत्वपूर्ण रियायतें दी हैं। पिछले एक वर्ष में, अमरीका से इसके तेल आयात में लगभग 80 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इसने अपने परमाणु दायित्व ढांचे के कुछ पहलुओं को समायोजित किया है और स्टारलिंक को परिचालन शुरू करने की अनुमति दी है, हालांकि यह चिंता बनी हुई है कि अप्रतिबंधित उपग्रह पहुंच संवेदनशील क्षेत्रों में संप्रभु नियंत्रण को कमजोर कर सकती है। भारत ने डिजिटल लेन–देन कर भी हटा दिया है। फिर भी, वाशिंगटन डेयरी उत्पादों और मक्का और सोयाबीन सहित अनुवंशिक रूप से संशोधित फसलों के लिए अप्रतिबंधित पहुंच पर जोर दे रहा है, जो पर्यावरण, राजनीतिक और सामाजिक चिंताओं के कारण भारत में एक बेहद संवेदनशील मुद्दा है। हालांकि दोनों पक्ष चुप हैं और कोई भी जानकारी सार्वजनिक नहीं की गई, ऐसा प्रतीत होता है कि वार्ताकार समझौते की सीमा तक पहुंच चुके हैं और अब यह समझौता राष्ट्रपति ट्रम्प के फैसले का इंतजार कर रहा है। देरी का उद्देश्य भारत से और अधिक रियायतें हासिल करना हो सकता है। हालांकि, भारत को रूसी कच्चे तेल पर स्पष्ट निर्णय लेना होगा। भारतीय रिफाइनरियों ने खरीद कम करने का इरादा जताया है लेकिन रूसी तेल का प्रवाह जारी है, जो नवम्बर में भारत के कच्चे तेल आयात का लगभग 35 प्रतिशत यानी 72 मिलियन टन था। पिछले 6 महीनों में अमरीका को निर्यात में 20.7 प्रतिशत की गिरावट आई है। स्पष्ट रूप से वाशिंगटन भारत की स्थिति को और जटिल बना रहा है, रूसी तेल आपूर्त्ति में कटौती से अमरीकी दबाव के समाप्त होने की कोई गारंटी न होना। व्यापार समझौता तभी सार्थक होता है जब वह निष्पक्ष और पारस्परिक हो। यदि इसकी कीमत रणनीतिक निर्भरता या नीतिगत स्वतंत्रता का नुकसान है, तो प्रतीक्षा करना ही समझदारी भरा विकल्प है।

राशिफल

मेष :– पुराने गलतियो से सीख लेते हुए वर्तमान को सुधारें। अच्छे कायरे से परिजनो के दिल में जगह बनावें। रोजगार में नए लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। विद्यार्थी शिक्षा में लापरवाही न करें।

बृषभ :– भौतिक सुख–साधनों की लालसा बढ़ेगी। महत्वपूर्ण कार्य के पूर्ति में असमर्थता जैसी पूर्वाग्रह मन में निराशा पैदा करेगी। नयी दिशा में सकारात्मक सोच अवश्य रंग लायेगी।

मिथुन :– मूल्यवान समय को व्यर्थ के कायरे में न गंवायें। व्यावसायिक यात्रा द्वारा लाभ संभव। संवेदनशील शरीर ग्रहो की प्रतिकूलता से बिमार पड़ सकता है।

कर्क :– सब कुछ सामान्यतः ठीक होते हुए भी मन में अरुचितकर लगेगा। रोजगार में नए लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। पुरानी घटनाओं के स्मरण से मन को कष्ट होगा। पिता के स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

सिंह :– किसी की अस्वस्थता से परिवार में कष्ट का वातावरण रहेगा। महत्वपूर्ण कार्यवश घर से दूर जाना पड़ सकता है। महत्वपूर्ण कायरे के प्रति आलस्य न करें, नुकशान हो सकता है।

कन्या :– प्रतिभाओं के बावजूद भी हीन भाव उन प्रतिभाओं के लाभ से वन्चित हो सकता है। कल्पनाओं में जीना छोड़ कर भौतिक जगत के अनुरूप चलने का प्रयास करें।

तुला :– योजनाओं के फलीभूत होने से मन प्रसन्न होगा। मस्त–मौला मन मौज मस्ती समय ब्यर्थ कर महत्वपूर्ण कार्य के प्रति लापरवाह होगा। शिक्षा–प्रतियोगिता में परिश्रम तिव्र होगा।

वृश्चिक :– नये घरेलू जिम्मेदारियों के पैदा होने से व्यय संभव। प्रयासरत कोई महत्वपूर्ण कार्य हल होने से मन अत्यंत प्रसन्न होगा। नये कायरे के क्रियान्वयन के लिए प्रयत्न शील बनें।

धनु :– नए क्षेत्रों मे प्रयास से लाभ संभव है। समस्याओ के समाधान से उत्साह में बृद्धि होगी। नए सम्बन्धों के सहयोग से आर्थिक कठिनाईयां दूर होंगी। पुरानी घटनाओं के स्मरण से मन को कष्ट संभव।

मकर :– सुख–साधनों की लालसा बढ़ेगी। महत्वपूर्ण कार्य के पूर्ति में असमर्थता जैसी पूर्वाग्रह मन में निराशा पैदा करेगी। पुरानी घटनाओं के स्मरण से मन को कष्ट संभव पहुंच सकता है।

कुंभ :– किसी महत्वपूर्ण निर्णय लेने में मन दुविधाग्रस्त होगा। मित्रवत संबंधों का लाभ प्राप्त होगा। आवेश में लिया गया निर्णय से पश्चाताप का कारण बन सकता है। नयी दिशा में सकारात्मक सोच अवश्य रंग लायेगी।

मीन :– मन को सकारात्मक दिशा प्रदान करें। भाग्य से प्राप्त अच्छे–बुरे सभी परीस्थितियों के साथ समझौतावादी बनें। अपने सुख–दुख को छोड़ परिजनों के सुख के बारे में सोचें।

फिल्म 'धुरंधर' की तूफानी कामयाबी का राज क्या है?

–बरखा दत्त

भारत में बॉक्स ऑफिस पर 800 करोड़ से ज्यादा और दुनिया में 1200 करोड़ रुपए से अधिक कमा चुकी 'धुरंधर' इतिहास रचने वाली फिल्म बन गई है। जिस पाकिस्तान के आतंकी–प्रश्रय को यह फिल्म उजागर करती है, वहां भी इसको लेकर जुनून है। पाकिस्तानी शादियों और पार्टियों में लोग इसके संगीत पर थिरक रहे हैं। कराची के लियारी इलाके की गैंगवार इसमें दिखाई गई हैं। इसकी इतने बड़े पैमाने पर कामयाबी का राज क्या है, यह न सिर्फ फिल्म निर्माताओं और समीक्षकों, बल्कि हम दर्शकों को भी समझने की जरूरत है। शुरू यहां से करें कि फोन और लैपटॉप पर नेटफ्लिक्स देखने के इस जमाने में यह फिल्म आपको बड़े परदे का वास्तविक सिनेमाई अनुभव देती है। भरी–पूरी स्टारकास्ट, एक्शन और डांस सीक्वेंस, सेट डिजाइन और प्रोडक्शन से लेकर संगीत और स्टोरीटेलिंग– सब कुछ बड़े परदे के लिए ही रचा गया था। 70 और 80 के दशक में बड़े हुए हममें से कइयों की कल्पनाएं हमारी फिल्मों ने गढ़ी हैं। दशकों बाद 'धुरंधर' को लेकर भी ऐसा ही हो रहा है। फिल्म लोगों को जोड़ने वाली एक ऊर्जा पैदा करने में सफल रही है। बेहतरीन तरीके से बनी इस फिल्म को देखने के बाद बहुत लोगों ने बलूचिस्तान के इतिहास, रहमान डकैत और बेनजीर भुट्टो की पीपीपी को जानने के लिए गूगल किया है। इतना तो शायद किसी डॉक्यूमेंट्री, खबर या किताब को पढ़ने के बाद भी नहीं किया होगा। फिल्म की एक और असाधारण बात ये है कि शायद यह पहली भारतीय फिल्म है, जिसकी कहानी लगभग पूरी तरह पाकिस्तान में आधारित है। पाकिस्तानी बाजारों, चुनावी रैलियों का री–क्रिएशन, वास्तविक पुलिसकर्मी और राजनेताओं

से प्रेरित कई काल्पनिक किरदार– इसमें सब कुछ बेहद बारीकी से गढ़ा गया है। भारत में आतंकी साजिश रचने में आईएसआई की भूमिका को इसमें जहां बिना किसी लाग–लपेट के उजागर किया गया है, वहीं पाकिस्तान की रोजमर्रा की जिंदगी को भी सटीक तरीके से चित्रित किया गया है। कुछ समीक्षकों ने आरोप लगाया है कि फिल्म भारतीय मुसलमानों के खिलाफ प्रोपेगंडा है। लेकिन यह बड़ी हास्यास्पद आलोचना है। फिल्म में ऐसा एक पल भी नहीं है, जो हमारे अपने लोगों के खिलाफ कोई संदेह पैदा करता हो। और यकीनन, जो लोग भारतीय मुसलमानों को पाकिस्तानियों के साथ मिलाकर एक ही नजर से देख रहे हैं, वही उनको सबसे बड़ा नुकसान पहुंचा रहे हैं। भारतीय मुस्लिमों को कभी भी उस नजर से नहीं देखा जा सकता। यदि कोई ऐसा करता है तो वह उस समुदाय का अपमान करता है। मैंने अपने दो मुस्लिम मित्रों के साथ यह फिल्म देखी थी और उन्हें भी यह मेरे जितनी ही पसंद आई। आदित्य धर का फिल्म–निर्माण का एक और तरीका गहराई से सोचने पर मजबूर करता है। यह है काल्पनिक दृश्यों को रीयल लाइफ फुटेज के साथ जोड़ देना। एक दर्शक के तौर पर मेरे लिए इस फिल्म में बेहद भावनात्मक दृश्य थे। मसलन, मुम्बई पर 26ध्11 आतंकी हमले की योजना बनाने के काल्पनिक दृश्यों के बीच उस वक्त की वास्तविक तस्वीरें विशाल स्क्रीन पर दिखाई जाना। इस आतंकी हमले को मैंने खुद मौके से रिपोर्ट किया था। कहानी कहने की तकनीक के तौर पर यह युक्ति बेहद प्रभावी साबित हुई है। या फिर रहमान डकैत का किरदार लें, जिसे मुंबई हमलों की अहम कड़ी के तौर पर प्रदर्शित किया गया है। फिल्म में उसे आईएसआई और पाकिस्तानी सेना के साथ साजिशें रचते दिखाया गया है। लेकिन असल में हमले को लेकर भारत के खुद के डोजियर में भी उसका नाम कहीं नहीं है। बहरहाल, हमें याद रखना चाहिए कि फिल्में डॉक्यूमेंट्रीज नहीं होतीं। और आखिर में फिल्म का संगीत भी उसका एक दमदार हिस्सा है। इसमें कव्वाली और कुछ पुरानी धुनों को फिर से जीवंत किया गया है। बहरीनी लहजे में गाया गया एक अरबी गीत तो मौजूदा समय का सबसे लोकप्रिय ट्रेंड बन चुका है। फिल्म में संगीत भी किरदारों जितना ही अहम है। यही सब है, जो फिल्म देखने के बाद लंबे समय तक यादों में बना रहता है। आज की पीढ़ी के लिए 'धुरंधर' वैसी ही है, जैसी पहले के जमाने में 'शोले' थी– एक कल्ट फिल्म! जो लोग भारतीय मुसलमानों को पाकिस्तानियों के साथ मिलाकर एक ही नजर से देख रहे हैं, वही उनको सबसे बड़ा नुकसान पहुंचा रहे हैं। मैंने अपने दो मुस्लिम मित्रों के साथ यह फिल्म देखी और उन्हें यह मेरे जितनी ही पसंद आई।

दूषित पेयजल

यह विडंबना ही है कि हमारे नागरिक प्रशासन का नियामक तंत्र आग लगने पर कुआं खोदने की मानसिकता से मुक्त नहीं होता। यदि समय रहते संवेदनशील या फिर घातक साबित होने वाली स्थिति व परिस्थिति पर नजर रखी जाए तो जनधन की हानि टाली भी जा सकती है। हाल ही में दूषित पेयजल से इंदौर में हुई जन हानि के बाद रोहतक और झज्जर की उन चेतावनियों की अनदेखी नहीं की जा सकती,जिसमें नागरिक घरों में आने वाले गंदे व बदबूदार पानी की शिकायत करते रहे हैं। निश्चय ही इस स्थिति को जन स्वास्थ्य से जुड़े आपातकाल के रूप में देखा जाना चाहिए। इसके साथ ही नागरिकों की शिकायत की जांच–पड़ताल कर अविलंब कार्रवाई भी होनी चाहिए। लेकिन इसके बावजूद जवाबदेही न निभाने और एक–दूसरे विभाग पर दोष मढ़ने का पुराना सिलसिला ही अकसर सामने आता है। उल्लेखनीय है कि इंदौर की हालिया दूषित पेयजल की त्रासदी में नगरपालिका द्वारा सप्लाई किए जा रहे पानी के सेवन से कई लोगों की जान चली गई और बड़ी संख्या में लोगों को अस्पताल में भर्ती कराया गया था। विडंबना यह है कि वहां भी नागरिकों की शुरुआती चेतावनियों को सामान्य शिकायतों के रूप में देखकर खारिज कर दिया गया था। लेकिन एक दर्जन से अधिक लोगों की मौत के बाद अधिकारियों ने स्वीकार किया कि इंदौर में पेयजल पाइपलाइनों में सीवेज का रिसाव हुआ था। यह स्वीकारोक्ति भी तब सामने आई जब बड़ा नुकसान हो चुका था। लगता है कि रोहतक व झज्जर भी इसी तरह के आसन्न खतरे के मुहाने पर खड़े हैं। वैसे देखा जाए तो देश के विभिन्न हिस्सों में सामने आने वाले ऐसे मामले न तो रहस्यमय हैं और न ही ये कोई नई बात ही है। बुनियादी ढांचागत व्यवस्था का जर्जर होना, सीवर लाइनों में रिसाव, अनियोजित शहरी विस्तार और नागरिक एजेंसियों के बीच आवश्यक समन्वय का अभाव, अकसर ऐसी स्थिति पैदा कर देता है, जहां सीवेज और पीने का पानी खतरनाक रूप से एक–दूसरे के करीब आ जाते हैं। गाहे–बगाहे देश के विभिन्न भागों में स्थानीय नागरिक जब–तब आरोप लगाते हैं कि पीने के पानी में सीवर का पानी मिलने की आशंका है। ऐसे में शासन–प्रशासन की पहली प्रतिक्रिया, इसके सत्यापन, पाइप लाइन की मरम्मत और वैकल्पिक पेयजल उपलब्ध करानेे की होनी चाहिए। ऐसे में स्वास्थ्य संकट को दूर करने और अपनी बात मनवाने के लिये यदि नागरिकों को सड़कों पर उतरना पड़ता है तो यह शासन–प्रशासन की विफलता को ही दर्शाता है। विडंबना यह है कि जल प्रदूषण का सबसे बुरा असर समाज के कमजोर वर्ग पर ही पड़ता है। ऐसे में बच्चे, बुजुर्ग और कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली वाले लोग इसकी चपेट में आते हैं। निर्विवाद रूप से दूषित जल से डायरिया, हेपेटाइटिस और अन्य दूषित जल जनित बीमारियों का प्रभाव तेजी से फैलता है।

योगी सरकार के नाम दर्ज हुई एक और बड़ी उपलब्धि, यूपी पुलिस को मिला प्रतिष्ठित स्कॉच अवार्ड

–नई दिल्ली में आयोजित 105वें स्कॉच समिट कार्यक्रम में महाकुम्भ–25 में स्थापित आईसीसीसी एवं यूपी पुलिस के सोशल मीडिया सेंटर की मेटा सुसाइडल अलर्ट की अभिनव पहल के लिए वर्ष–25 के प्रतिष्ठित स्कॉच अवार्ड श्रेणी–गोल्ड से किया गया सम्मानित

–यूपी पुलिस सोशल मीडिया के माध्यम से आमजन के प्राणों की रक्षा का अभिनव प्रयोग करने वाली बनी विश्व की प्रथम पुलिस एजेंसी

लखनऊ ब्यूरो

लखनऊ। योगी सरकार के नाम शनिवार को एक और बड़ी उपलब्धि दर्ज हो गयी। योगी सरकार की यूपी पुलिस को नई दिल्ली में शनिवार को आयोजित 105वें स्कॉच समिट कार्यक्रम में महाकुम्भ–25 में स्थापित आईसीसीसी इंटीग्रेटेड कमांड एंड कंट्रोल सेंटर एवं यूपी पुलिस के सोशल मीडिया सेंटर की मेटा सुसाइडल अलर्ट से संबंधित अभिनव पहल को वर्ष–25 के प्रतिष्ठित स्कॉच अवार्ड (श्रेणी–गोल्ड) से सम्मानित किया गया। इस वर्ष कार्यक्रम की थीम "Governing Viksit Bharat" रही। यह प्रतिष्ठित पुरस्कार कार्यक्रम हर वर्ष आयोजित किया जाता है। 105osa SKOCH समिट कार्यक्रम में पुलिस महानिदेशक राजीव कृष्ण को पुरस्कार प्रदान किया गया, जिसे उनके द्वारा नामित अधिकारियों क्रमशः ICCC Mahakumbh–25 के तत्कालीन प्रभारी आईपीएस अमित कुमार एवं Meta Suicidal Alert का अवॉर्ड पुलिस महानिदेशक के जनसम्पर्क अधिकारी राहुल श्रीवास्तव तथा सत्या यादव, डायरेक्टर आउटरीच, साउथ एशिया फेसबुक (मेटा) द्वारा ग्रहण किया गया। डीजीपी राजीव कृष्ण ने बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा तकनीक–समर्थ, संवेदनशील एवं जनोन्मुख पुलिसिंग के लिए लगातार दिशा–निर्देश एवं संसाधन प्रदान किये जा रहे हैं। ऐसे में सीएम योगी की मंशा के अनुरुप प्रौद्योगिकी एवं आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के पुलिसिंग में उपयोग को प्राथमिकता दी जा रही है। साथ ही यूपी पुलिस द्वारा तकनीकी नवाचारों को प्रभावी रूप से लागू किया जा रहा है। इस वर्ष प्रतिष्ठित स्कॉच अवार्ड–25 यूपी पुलिस को मिलना इसका जीता जागता उदाहरण है। यह सम्मान जनसुरक्षा एवं जीवन संरक्षण के क्षेत्र में यूपी पुलिस द्वारा किए गए तकनीकी नवाचारों, उत्कृष्ट सरकारी सेवाओं एवं प्रभावशाली कार्यों की राष्ट्रीय स्तर पर सशक्त मान्यता को दर्शाता है। Integrated Command and Control Center(ICCC): महाकुंभ–25 में श्रद्धालुओं की सुविधा, सुचारू संचालन और सुरक्षा के प्रति यूपी पुलिस की गहरी प्रतिबद्धता के दृष्टिगत आईसीसीसी को एक नर्व सेंटर / नियंत्रण हब के रूप में विकसित किया गया, जिसमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) तथा अन्य कटिंग–एज टेक्नोलॉजी का उपयोग किया गया ताकि मेले के दौरान जनमानस की सेवा, भीड़ प्रबंधन, आपदा प्रतिक्रिया, आपातकालीन सेवाएं और इंटर–एजेंसी समन्वय को सर्वोत्तम स्तर पर संचालित किया जा सके।

महाकुंभ–25 में आईसीसीसी ने इस प्रकार अपना विशिष्ट योगदान दिया

– AI–driven प्रणाली के माध्यम से crowd estimation, व्यक्ति–सुरक्षा और यातायात प्रबंधन।
– एकीकृत कमांड एवं कंट्रोल सेंटर (ICCC)के ज़रिए 24x7 निगरानी, शिचुएशन रूम, आपातकालीन मॉनिटरिंग और त्वरित निर्णय–निर्धारण।
– डिजिटल–गवर्नेंस एवं स्मार्ट टेक्नोलॉजी के समावेश से श्रद्धालुओं की सहायता के लिए चौटबॉट / मास मैसेजिंग, ऐप–आधारित सपोर्ट।
– भीड़–प्रबंधन, डीजास्टर–रेडीनेस और विविध एजेंसियों (पुलिस, प्रशासन, स्वास्थ्य, अग्नि एवं आपदा प्रबंधन आदि) के बीच बेहतर तालमेल।
Meta Suicidal Alert: यूपी पुलिस के सोशल मीडिया सेन्टर द्वारा यह पहल Meta कंपनी के सहयोग से विकसित की गई है। इसके तहत फेसबुक एवं इंस्टाग्राम जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर आत्महत्या से संबंधित सामग्री पोस्ट किए जाने की स्थिति में डमजं द्वारा तत्काल पुलिस मुख्यालय स्थित सोशल मीडिया सेंटर को ई–मेल एवं फोन कॉल के माध्यम से अलर्ट भेजा जाता है। पुलिस मुख्यालय में स्थापित 24X7 समर्पित डेस्क, जो यूपी एसटीएफ सर्वर से एकीकृत है, पीड़ित की लोकेशन का त्वरित पता लगाकर संबंधित जनपद को सूचना प्रेषित करती है। इसके बाद स्थानीय पुलिस द्वारा पीड़ित एवं उसके परिजनों से संपर्क कर समय रहते सहायता, रेस्क्यू एवं काउंसिलिंग प्रदान की जाती है तथा अपने अधिकार–क्षेत्र में रहते हुए पीड़ित की समस्या के समाधान का भी प्रयास किया जाता है। 1 जनवरी–23 से 31 दिसम्बर–25 के मध्य डमजं से प्राप्त 1,802 अलर्ट के माध्यम से कुल 1,805 व्यक्तियों को सुरक्षित बचाया जा चुका है। इन बचाए गए 1,805 लोगों में से 1,389 पुरुष एवं 416 महिलाएं शामिल हैं। इन एज ग्रुप के लोगों को बचाया गया

– 13–18 वर्ष आयु वर्ग : 623 व्यक्ति
– 19–25 वर्ष आयु वर्ग : 905 व्यक्ति
– 26–35 वर्ष आयु वर्ग : 190 व्यक्ति
– 35 वर्ष से अधिक आयु वर्ग : 87 व्यक्ति

आत्महत्या के प्रयास के सभी मामलों में कांउसिलिंग की नवीन पहल
यूपी पुलिस द्वारा त्वरित हस्तक्षेप के माध्यम से संबंधित व्यक्ति के प्राण की रक्षा तत्समय कर ली जाती है, लेकिनभविष्य में आत्महत्या संबंधी विचारों की पुनरावृत्ति को रोकने के लिए ऐसे व्यक्तियों को निरंतर एवं प्रभावी कांउसिलिंग की आवश्यकता रहती है। ऐसे में पुलिस महानिदेशक द्वारा नवीन पहल करते हुए आत्महत्या के प्रयास के सभी मामलों में जनपदीय मिशन शक्ति केन्द्र एवं 1090 के टेली–कॉउंसलर के माध्यम से पीड़ित की कांउसिलिंग के लिए निर्देश जारी किए गए हैं।

मेरठ में बेटी के अपहरण और मां की हत्या पर तनाव

विपक्ष ने राज्य सरकार पर साधा निशाना

संवाददाता

लखनऊ। मेरठ में एक महिला की हत्या और उसकी बेटी के अपहरण के बाद विपक्षी दलों ने उत्तर प्रदेश सरकार की कड़ी आलोचना की है। विपक्षी दलों ने कहा कि उत्तर प्रदेश को कानून–व्यवस्था की अराजकता की स्थिति में धकेला जा रहा है। कांग्रेस नेता उदित राज ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, मेरठ के कपसाड़ गांव में दलित महिला खेत जाने के लिए अपनी बेटी के साथ घर से निकली थी। रास्ते में गुंडे एक बेटी को किडनैप करने लगे। मां ने रोकने की कोशिश की तो उसकी हत्या कर दी और बेटी को उठा ले गए। इस घटना को करीब 48 घंटे हो चुके हैं, लेकिन कुछ पता नहीं लग सका है।ष्उदित राज ने कहा कि उत्तर प्रदेश में दलित उत्पीड़न की घटनाएं बहुत बढ़ी हैं। कांग्रेस नेता ने कहा, क्या आरोपियों और उनके रिश्तेदारों के घरों पर बुलडोजर चला? हिंदू राष्ट्र अभी बना नहीं, उसके पहले की झलक है।समाजवादी पार्टी नेता योगेश वर्मा ने कहा, घटना बहुत दर्दनाक और चौंकाने वाली है। इसने पूरे दलित समुदाय को हिला दिया है।

ऐसे क्रूर काम पर कार्रवाई होनी चाहिए और सरकार को जिम्मेदार लोगों को सबक सिखाना चाहिए। अब तक प्रशासन को बुलडोजर लेकर आरोपियों के घरों तक पहुंच जाना चाहिए था।मेरठ पुलिस के अनुसार जिले के कपसाड़ गांव में अपराधियों ने 20 साल की लड़की का अपहरण किया था। 50 साल की महिला ने अपनी बेटी को बचाने की कोशिश की लेकिन अपराधियों ने धारदार हथियार से हमला किया। महिला की अस्पताल में इलाज के दौरान मौत हो गई।इस घटना से इलाके में गुस्सा है। पुलिस ने आरोपियों की पहचान पारस सोम, सुनील कुमार के रूप में की है। दोनों उसी गांव के रहने वाले हैं। पुलिस आरोपियों और अगवा की गई लड़की की तलाश में जुटी है।

युवक-युवती ट्रेन के आगे कूदे, मौत, एक साथ ऑफिस में करते थे काम

संवाददाता

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में युवक–युवती ट्रेन के आगे कूद गए। उनकी टुकड़ों में कटी लाश ट्रैक किनारे पड़ी मिली। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा है। पुलिस सुसाइड के कारणों की जांच कर रही है। घटना तालकटोरा थाना क्षेत्र में पारा क्रॉसिंग के पास शनिवार दोपहर पौने 2 बजे हुई। मृतक की पहचान निशातगंज न्यू हैदराबाद बैरल नंबर 7 बल्दा कॉलोनी के रहने वाले सूर्यकांत (40) के रूप में हुई। वहीं युवती की पहचान अर्जुन गंज शाह खेड़ा गांव की रहने वाली दीपाली (25) के रूप में हुई है। प्रत्यक्षदर्शी विकास कुमार ने बताया युवक युवती पारा क्रासिंग के पास करीब ढाई घंटे से टहल रहे थे। एक बजकर 45 मिनट पर वंदे भारत ट्रेन गुजरी। अचानक युवक–युवती सामने से आती ट्रेन के आगे ट्रैक पर लेट गए। लोगों ने आवाज लगाई तब तक ट्रेन उनके ऊपर से गुजर गई। इससे युवती का सिर धड़ से अलग हो गया, जबकि युवक के दोनों हाथ कट गए। दोनों की घटनास्थल पर ही मौत हो गई।

बीजेपी सरकार ने आशा वर्कर से की वादा खिलाफी : अखिलेश

संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में लंबित मांगों को लेकर आशा वर्कर्स लगातार विरोध प्रदर्शन कर रही हैं। आशा वर्कर अपनी मांगों को लेकर प्रदेश के विभिन्न जिलों में प्रदर्शन कर रही हैं, ज्ञापन दे रही हैं। सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने उनका समर्थन करते हुए सरकार को घेरा है। उन्होंने कहा, भाजपा सरकार वादाखिलाफी कर रही है और आशा बहनों को नीचा दिखाने के लिए आपत्तिजनक भाषा का भी इस्तेमाल कर रही है। अखिलेश यादव ने सोशल मीडिया एक्स पर लिखा, भाजपा सरकार ने आशा वर्कर्स से किया कोई वादा पूरा नहीं किया है, इसी कारण आशा बहनों के बीच निराशा और गुस्सा फैला हुआ है। ऊपर से वादाखिलाफी करनेवाली भाजपा सरकार शासन और प्रशासन दोनों ही आशा बहनों को नीचा दिखाने के लिए जब गलत और आपत्तिजनक भाषा का इस्तेमाल करके उनका अपमान करते हैं तो ये क्रोध, आक्रोश में बदल जाता है।जब भाजपाई कहते हैं कि आशा वर्कर अपने पतियों को बैठाकर खिलाती हैं तो इसका मतलब है कि भाजपा के राज में बेकारी–बेरोजगारी इतनी ज़्यादा है कि आशा वर्करों के घर–परिवार में बेरोजगारी की वजह कोई काम करनेवाला नहीं है।

इंडिया स्किल्स प्रतियोगिता: स्टेट लेवल स्किल्स कम्पटीशन का आयोजन

1.09 लाख पंजीकरण के साथ यूपी बना इंडिया स्किल्स प्रतियोगिता का अग्रणी राज्य
12 से 23 जनवरी तक लखनऊ में 20स्किल्स में होंगे मुकाबले, पुरस्कार वितरण 24 जनवरी को
हर प्रतिभा को अवसर और पहचान देना योगी सरकार की प्राथमिकता : कपिल देव

संवाददाता

लखनऊ। प्रदेश के व्यावसायिक शिक्षा, कौशल विकास एवं उद्यमशीलता मंत्री कपिल देव अग्रवाल ने बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में प्रदेश सरकार युवाओं को "कौशल से सफलता की ओर, हर प्रतिभा को मिले अवसर और पहचान" के लक्ष्य के साथ निरंतर कार्य कर रही है। इंडिया स्किल्स प्रतियोगिता 2025 के अंतर्गत राज्य स्तरीय स्किल्स कम्पटीशन का आयोजन के सफल संचालन हेतु ग्राउंड लेवल पर विभागीय टीमें पूर्ण उत्साह एवं प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही हैं ताकि प्रतियोगिता सहज, पारदर्शी प्रभावशाली हो। इंडिया स्किल्स प्रतियोगिता के लिए प्रदेश में109249 अभ्यर्थियों नेपंजीकरण कराया है जो देश में सर्वाधिक है। जनपद और मंडल स्तरीय प्रतियोगिताओं का आयोजन पूर्ण हो चुका है। अब राज्य स्तरीय प्रतियोगिताएं का आयोजन किया जा रहा है। यह प्रतियोगिता युवाओं में आत्मविश्वास, व्यावसायिक दक्षता और नेतृत्व क्षमता के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरण समारोह में सम्मानित किया जाएगा, जिससे उन्हें आगे और बेहतर करने की प्रेरणा मिलेगी। कौशल विकास मिशन निदेशक पुलकित खरे ने बताया कि राज्य स्तरीय स्किल्स कम्पटीशन 12, 13, 19, 20, 22 एवं 23 जनवरी को किया जाएगा जबकि 24 जनवरी को पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित होगा। प्रतियोगिता 20 स्किल्स में की जा रही है, जिनमें एडिटिव मैन्युफैक्चरिंग, वेल्डिंग, इलेक्ट्रॉनिक्स, फैशन टेक्नोलॉजी, सीएनसी मिलिंग, सीएनसी टर्निंग, ऑटोबॉडी रिपेयर, ऑटोमोबाइल टेक्नोलॉजी, क्लाउड कंप्यूटिंग, साइबर सिक्योरिटी, आईसीटी नेटवर्क इंफ्रास्ट्रक्चर, सॉफ्टवेयर एप्लीकेशन डेवलपमेंट, वेब टेक्नोलॉजी, ब्यूटी थेरेपी, हेयर ड्रेसिंग, इलेक्ट्रिकल इंस्टॉलेशंस, रेफ्रिजरेशन एंड एयर कंडीशनिंग, प्लंबिंग एंड हीटिंग, ब्रिकलाइंग तथा हेल्थ एंड सोशल केयर शामिल हैं। प्रतियोगिता आईटीआई अलीगंज आईटीआई मोहनलालगंज आईटीओटी, रेमंड सेंटर, राजकीय पॉलिटेक्निक, आईटीआई चारबाग, पॉलिटेक्निक महिला, सीआईपीईटी सहित विभिन्न संस्थानों में की जा रही है। प्रतियोगिता के प्रत्येक चरण में प्रतिभागियों की कौशल दक्षता, नवीनता, रचनात्मक सोच और प्रदर्शन क्षमता का सूक्ष्म एवं निष्पक्ष मूल्यांकन किया जा रहा है।

घर के अंदर 4 साल की बच्ची की जलकर मौत, बहन के साथ कमरे में सो रही थी

संवाददाता

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में घर के अंदर जलकर 4 साल की बच्ची की मौत हो गई। वह अपनी 6 साल की बहन के साथ कमरे में सो रही थी। कमरे में ही छोटा मंदिर है। उसमें रखे दीपक से आग पर्दे पर लगी फिर कमरे में भी फैल गई। बड़ी बहन उठकर भाग गई लेकिन 4 साल की बच्ची आग में ही झुलस गई। दुर्घटना इंदिरानगर थाना क्षेत्र के सुगामऊ हनुमंतपुरम की डूडा कॉलोनी में हुई। यहां सुमित कुमार रहते हैं। वह पत्नी के साथ सब्जी लेने गए तभी उनके घर में हादसा हो गया। सुमित ड्राइवरी करके परिवार का पालन–पोषण करते हैं। उनका रो–रोकर बुरा हाल है। वह कुछ बोलने से पहले ही फफक पड़ते हैं। सुमित ने खुद को संभालते हुए बताया शुक्रवार रात करीब 9 बजे कमरे में आग लग गई। कमरे में दोनों बेटी पंखुड़ी और अविका सो रही थी। आग की लपटें देख पंखुड़ी बाहर भाग गई जबकि छोटी बेटी आग की चपेट में आ गई। पंखुड़ी बाहर निकलकर चिल्लाई। आसपास के लोगों ने इकट्ठा होकर आग बुझाने

का प्रयास किया लेकिन आग विकराल रूप ले चुकी थी। धुआं भर जाने के कारण अविका किसी को दिखाई नहीं दी। काफी मशक्कत के बाद लोगों ने उसे बाहर निकाला। गंभीर हालत में में निजी अस्पताल ले गए। वहां से डॉक्टर ने लोहिया हॉस्पिटल के लिए रेफर कर दिया। लोहिया अस्पताल पहुंचने पर डॉक्टरों ने बच्ची को मृत घोषित कर दिया। पुलिस में शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है। पिता सुमित ने बताया वह काम से आने के बाद घर से कुछ दूरी पर पत्नी शिल्पी के साथ सब्जी लेने गए थे। तभी उन्हें घर में आग लगने की सूचना मिली। वहां से वह वापस पहुंचे तो बच्ची को गंभीर हालत में पाया। सी साल बच्ची का सीआईएस स्कूल में प्री नर्सरी में एडमिशन कराया था। घटना के बाद से परिवार का रो–रोकर बुरा हाल है।

भारत में 140 करोड़ लोग सनातनी, केवल पूजा पद्धति बदली : रितेश्वर जी महाराज

संवाददाता

लखनऊ। सद्गुरु रितेश्वर जी महाराज ने भारत के 140 करोड़ लोगों को सनातनी बताया है। उन्होंने कहा है कि भारत के रहने वाले सभी लोग एक ही पूर्वज की संतान हैं, केवल उनकी पूजा पद्धति अलग हो सकती है, लेकिन वह सभी सनातनी हैं। इसलिए भारत हमेशा से हिन्दू राष्ट्र रहा है। इस देश को हिंदू राष्ट्र बनाने की जरूरत नहीं है। उन्होंने यह बातें पत्रकारों के पूछे गये सवाल के जवाब में कहीं हैं। साथ ही उन्होंने कहा है कि भारत में रहने वाले हर शख्स को संविधान के हिसाब से रहना होगा, चाहे वो कोई बाबा ही क्यों न हो। इसके अलावा उन्होंने बीजेपी के पूर्व सांसद बृज भूषण शरण सिंह का दबादबा था, दबादबा है और दबदबा बना रहेगा विशलेषण भी किया। उन्होंने बताया कि आखिर क्या है पूर्व सांसद के दबदबे का रहस्य। दरअसल, सद्गुरु रितेश्वर जी महाराज लखनऊ पहुंचे थे। इस दौरान उन्होंने शनिवार को लखनऊ विश्वविद्यालय स्थित उमा हरिकृष्ण अवस्थी सभागार में पत्रकारों से बात की और राष्ट्रकथा के महत्व पर बात की और यह क्यों जरूरी है, इसे भी बताया। उन्होंने कहा कि देवी भागवता कथा, हनुमंत कथा आदि कथा बहुत समय से चल रहीं थीं, लेकिन इस विषय पर चिंतन हुआ कि जब राष्ट्र सुरक्षित रहेगा, तो सबकुछ रहेगा। इसलिए राष्ट्र की अखण्डता, एकता और सुरक्षा के लिए राष्ट्रकथा कराने पर विचार बना। जिसका श्रेय उन्होंने पूर्व सांसद बृज भूषण शरण सिंह को दिया। उन्होंने पत्रकारों के सवाल का जवाब देते हुये कहा कि भारत पहले से हिंदू राष्ट्र हैं, यहां रहने वाला हर भारतीय सनातनी है, सबके पूर्वज एक हैं, बस उनकी पूजा पद्धति अलग हो सकती है। उन्होंने बंगाल में बाबरी मस्जिद के निर्माण पर कहा कि मस्जिद बाबर के नाम पर नहीं पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम के नाम पर बननी चाहिए। सद्गुरु रितेश्वर जी महाराज ने गोंडा में बीजेपी के पूर्व सांसद बृज भूषण शरण सिंह द्वारा नंदिनी निकेतन में आयोजित 8 दिवसीय राष्ट्रकथा कार्यक्रम में दबादबा था, दबादबा है और दबदबा बना रहेगा की बात कही थी, जिसका आज अर्थ भी समझा। उन्होंने कहा कि गांव,गरीब और छात्र के उत्थान के लिए कार्य करने वाले का दबदबा हमेशा रहता है और बृज भूषण शरण सिंह इसी तहर का ही काम करते हैं। इस अवसर पर उनके साथ विधायक प्रतीक भूषण सिंह, विधायक डॉ. नीरज बोरा समेत कई लोग मौजूद रहे।

योगी मिशन को साकार कर रहा फतेहपुर, एआई एप से वैक्सीनेशन की निगरानी, आकांक्षी ब्लॉक हथगाम में शुरू की गई सुविधा

संवाददाता

लखनऊ। योगी सरकार प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाओं को तकनीक से जोड़कर सुदृढ़ बनाने की दिशा में लगातार ठोस कदम उठा रही है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर करने के लिए हर स्तर पर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एआई और आधुनिक तकनीक का अधिक से अधिक उपयोग करने पर जोर दिया जा रहा है। सीएम योगी के विजन को आत्मसात करते हुए फतेहपुर जिले ने एक मिशाल पेश की है, जहां एआई आधारित एप स्मार्ट वैक्सीनेशन ट्रैकिंग सिस्टम विकसित कर बच्चों के टीकाकरण की निगरानी की जा रही है। फतेहपुर जिला प्रदेश का पहला ऐसा जिला बन गया है, जहां बच्चों के वैक्सीनेशन के लक्ष्य को शत प्रतिशत प्राप्त करने के लिए एआई का इस्तेमाल किया जा रहा है।

हिमाचल का गांजा तस्कर गिरफ्तार, एनसीबी ने पूर्वांचल एक्सप्रेसवे से 221 किलों गांजा जब्त किया

संवाददाता

लखनऊ। नार्कोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (एनसीबी) लखनऊ जोनल यूनिट ने नशे के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान में एक बड़ी सफलता हासिल की है। टीम ने पूर्वांचल एक्सप्रेसवे पर स्थित महुआ टोल प्लाजा के पास एक फोर्स ट्रैवलर गाड़ी से 221 किलो गांजा जब्त किया। एनसीबी की इस कार्रवाई में हिमाचल प्रदेश के मंडी जिले के रहने वाले 41 वर्षीय विजय सिंह को गिरफ्तार किया गया है। एनसीबी अधिकारियों के अनुसार शुरुआती जांच में पता चला है कि यह भारी मात्रा में नशीला पदार्थ बिहार से लाया जा रहा था और इसे अंबाला, हरियाणा पहुंचाया जाना था। गाड़ी की तलाशी के दौरान गांजे की खेप सीलबंद पैकेटों में छिपाकर रखी गई थी। टीम ने मौके पर ही पंचनामा करने के बाद गांजा के साथ में वाहन को भी कब्जे में ले लिया। अधिकारियों ने बताया कि गिरफ्तार आरोपी से पूछताछ की जा रही है। ताकि तस्करी नेटवर्क से जुड़े अन्य लोगों और सप्लायरों तक पहुंचा जा सके।

भाजपा पार्षद के घर के बाहर गोवंश का सिर मिला

संवाददाता/लखनऊ। राजधानी लखनऊ में भाजपा पार्षद के घर के बाहर गोवंश का सिर मिला है। सिर के साथ बॉडी के अन्य हिस्सों का अवशेष भी लगा हुआ था। पार्षद अनूप कमल सक्सेना मेयर और नगर निगम प्रतिनिधिमंडल के साथ गुजरात गए हुए हैं। उन्होंने घटना की जानकारी होने पर कहा कि कोई कुत्ता इसे घसीटकर लाया होगा। घटना शनिवार सुबह की राजाजीपुरम सी–ब्लॉक के शीतला देवी वार्ड की है। पार्षद अनूप कमल की पत्नी सुबह घर के बाहर निकलीं तो उन्हें मृत गोवंश का सिर और अवशेष दिखा। वह डर गईं। उन्होंने तुरंत लौटकर घरवालों को इसकी जानकारी दी और पति को फोन कर बताया। सूचना पर नगर निगम के कर्मी और पुलिस की टीम पहुंची। पार्षद की पत्नी तुरंत परिवार और स्थानीय लोगों को बताया। कुछ ही देर में यह खबर पूरे इलाके में फैल गई और लोग मौके पर जमा होने लगे। काफी भीड़ लग गई थी। लोग तरह–तरह की चर्चा कर रहे थे। किसी ने कहा कोई पार्षद को फंसाने के लिए यह किया होगा तो किसी ने कहा कि कुत्ते इस अवशेष को कहीं से घसीट लाए होंगे। मामले में सूचना मिलते ही पुलिस पहुंची और जांच शुरू कर दी। फॉरेंसिक टीम और नगर निगम कर्मियों ने मौके से अवशेषों को हटवाया। पुलिस ने आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगालनी शुरू कर दी। ताकि यह पता लगाया जा सके कि यह किसने और कब किया। पार्षद ने कहा है कि पुलिस को लिखित शिकायत भी दी है।

रोल मॉडल बना यूपी का सोलर मॉडल, सीख रहे देश के अन्य राज्य

बिहार और असम की मांग पर प्रदेश के सोलर विशेषज्ञ वहां जाकर दे रहे यूपी के सोलर मॉडल की जानकारी
उत्तर प्रदेश का मॉडल अब पूरे देश में सफलता की केस–स्टडी के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा
दिसंबर में एक ही दिन 1,868 रूफटॉप सोलर इंस्टॉलेशन कर यूपी ने रचा विश्व रिकॉर्ड

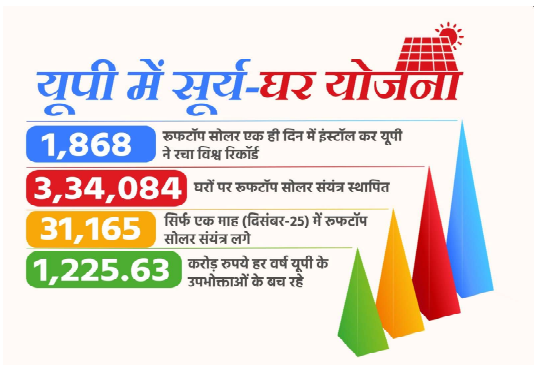

लखनऊ ब्यूरो

लखनऊ। उत्तर प्रदेश ने सौर ऊर्जा के क्षेत्र में ऐसा इतिहास रचा है, जिसकी गूंज न केवल पूरे देश में बल्कि अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा मंचों पर भी सुनाई दे रही है। प्रधानमंत्री पीएम सूर्य घर योजना के अंतर्गत मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के कुशल मार्गदर्शन में प्रदेश ने रूफटॉप सोलर ऊर्जा को जनआंदोलन का रूप दे दिया है। यूपी का सोलर मॉडल आज अन्य राज्यों के लिए रोल मॉडल बन गया है और इसकी कार्यप्रणाली का अध्ययन कर कई राज्य अपने यहां इसी तर्ज पर व्यवस्था लागू कर रहे हैं। बिहार और असम की मांग पर प्रदेश के सोलर एक्सपर्ट उनके यहां जाकर उन्हें यूपी के सोलर मॉडल की जानकारी दे रहे हैं। कई राज्य कर रहे अध्ययन उत्तर प्रदेश नवीन एवं अक्षय ऊर्जा विकास अभिकरण (यूपीनेडा) के एमडी एवं निदेशक इंद्रजीत सिंह ने बताया कि बिहार और असम को यूपी के सोलर मॉडल पर प्रशिक्षण एवं प्रस्तुतीकरण भी दिया गया है। कई अन्य राज्यों ने भी यूपी के सोलर मॉडल का अध्ययन करने की इच्छा जाहिर की है। उन्होंने बताया कि आज उत्तर प्रदेश में गांव–शहर की छतों पर चमकते सोलर पैनल केवल बिजली नहीं पैदा कर रहे, बल्कि नई उम्मीद, नई अर्थव्यवस्था और नया हरित उत्तर प्रदेश गढ़ रहे हैं। यही कारण है कि उत्तर प्रदेश का मॉडल अब पूरे देश में सफलता की केस–स्टडी के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। प्रदेश की ऊर्जा स्वावलंबन की दिशा में ऐतिहासिक कदम प्रदेश में अब तक रूफ टाप सोलर संयत्र के लिए 10,43,102 आवेदन प्राप्त हुए हैं। इनमें से 3,34,084 घरों पर रूफटॉप सोलर संयंत्र स्थापित हो चुके हैं। कुल 1,148.56 मेगावॉट की सोलर क्षमता विकसित होने से प्रदेश ने ऊर्जा स्वावलंबन की दिशा में ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है। केंद्र सरकार द्वारा 2,285.46 करोड़ रुपये सब्सिडी और राज्य सरकार द्वारा लगभग 600 करोड़ रुपये अतिरिक्त सब्सिडी सीधे लाभार्थियों के खातों में डीबीटी के माध्यम से प्रदान की गई है। एक ही दिन में 1,868 रूफटॉप सोलर इंस्टॉलेशन का बनाया विश्व रिकॉर्ड उन्होंने बताया कि दिसंबर 2025 में उत्तर प्रदेश ने रूफटॉप सोलर संयंत्र स्थापना में नया कीर्तिमान स्थापित किया। महीने भर में 31,165 रूफटॉप सोलर संयंत्र लगाए गए, जिससे यूपी ने देश में दूसरा स्थान हासिल किया। इससे भी बड़ी उपलब्धि यह रही कि एक ही दिन में 1,868 इंस्टॉलेशन कर प्रदेश ने विश्व रिकॉर्ड बनाया। यह उपलब्धि तब दर्ज की गई जब अधिकांश क्षेत्रों में घना कोहरा, कड़ाके की ठंड और सीमित कार्य घंटे जैसी प्रतिकूल परिस्थितियां थीं। इन चुनौतियों के बावजूद जिला प्रशासन, ऊर्जा विभाग, बैंकिंग संस्थान और सोलर वेंडर्स के समन्वय ने इसे संभव बनाया। हर वर्ष 188 करोड़ यूनिट स्वच्छ बिजली, 1,225 करोड़ रुपये की बचत ऊर्जा विशेषज्ञों का आंकलन है कि स्थापित रूफटॉप सोलर क्षमता से प्रतिवर्ष 188 करोड़ यूनिट से अधिक स्वच्छ बिजली का उत्पादन हो रहा है। यह उत्पादन कई मध्यम आकार के ताप विद्युत संयंत्रों के बराबर है। इससे लगभग 30–35 लाख शहरी परिवारों की वार्षिक बिजली आवश्यकता पूरी की जा सकती है। यदि 6.5 रुपये प्रति यूनिट की दर से आकलन किया जाए तो उपभोक्ताओं को हर वर्ष 1,225.63 करोड़ रुपये से अधिक की सामूहिक बचत हो रही है। औसत 3 किलोवाट संयंत्र से ही एक परिवार को 27–30 हजार रुपये वार्षिक बचत मिल रही है, जिससे मध्यम वर्ग की आर्थिक स्थिरता मजबूत हुई है। रोजगार, उद्योग और हरित अर्थव्यवस्था को मिला नया संबल रूफटॉप सोलर क्षेत्र श्रम–प्रधान होने के कारण स्थापित सौर क्षमता से अनुमानतः 1.25 लाख से अधिक प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रोजगार सृजित हुए हैं। तकनीशियन,

इलेक्ट्रिशियन, सिविल वर्कर, ओएंडएम कर्मी, लॉजिस्टिक्स और सोलर वेंडर्स से जुड़े युवाओं को बड़े पैमाने पर अवसर मिला है। लगभग 2,800 करोड़ रुपये से अधिक की सब्सिडी ने केवल उपभोक्ताओं को राहत नहीं दी, बल्कि सोलर मॉड्यूल, इन्वर्टर, केबल, माउंटिंग स्ट्रक्चर से जुड़े उद्योगों को नई गति प्रदान की है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि सोलर सब्सिडी पर खर्च किया गया प्रत्येक एक रुपया ढाई से तीन रुपये तक की अतिरिक्त आर्थिक गतिविधि उत्पन्न कर रहा है। तकनीकी नवाचार और हरित वित्तीय भविष्य की दिशा में कदम नवीन ऊर्जा विशेषज्ञ उपकारी नाथ के अनुसार यूनिफाइड एनर्जी इंटरफेस (UEI) के माध्यम से सोलर से उत्पादित अतिरिक्त बिजली का डिजिटल लेखा–जोखा तैयार किया जाएगा। इससे भविष्य में पीयर–टू–पीयर एनर्जी ट्रेडिंग, सोलर कॉइन और सोलर रुपया जैसी अवधारणाओं के क्रियान्वयन का मार्ग प्रशस्त होगा। यह प्रणाली उद्योगों को हरित ऊर्जा से जोड़ने में सहायक होगी तथा अंतरराष्ट्रीय मानकों जैसे कार्बन बॉर्डर एडजस्टमेंट मैकेनिज्म (CBAM) के अनुरूप उत्पादन को प्रोत्साहित करेगी। पर्यावरणीय लाभ : 16.5 लाख मीट्रिक टन CO2 उत्सर्जन में कमी स्वच्छ ऊर्जा उत्पादन के परिणामस्वरूप हर वर्ष 16.5 लाख मीट्रिक टन कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन में कमी आ रही है। यह कमी करोड़ों पेड़ लगाने के बराबर पर्यावरणीय लाभ प्रदान करती है। इससे उत्तर प्रदेश के नेट–जीरो लक्ष्य एवं जलवायु प्रतिबद्धताओं को मजबूत सहारा मिला है। ग्रामीण इलाकों में सोलर पैनलों से न केवल बिजली की उपलब्धता बढ़ी है, बल्कि ऊर्जा आत्मनिर्भरता की सोच भी विकसित हुई है।

विकसित छत्तीसगढ़ के निर्माण में उद्यमियों की होगी महत्वपूर्ण भूमिका- मुख्यमंत्री साय

मुख्यमंत्री कॉस्मो ट्रेड एंड बिल्ड फेयर एक्सपो 2026 के शुभारंभ कार्यक्रम में हुए शामिल

बीएनई

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय विगत दिवस राजधानी रायपुर में रोटरी क्लब ऑफ कॉस्मोपॉलिटन रायपुर द्वारा आयोजित कॉस्मो ट्रेड एंड बिल्ड फेयर एक्सपो 2026 के शुभारंभ कार्यक्रम में शामिल हुए। इस अवसर पर मुख्यमंत्री साय ने कहा कि विकसित छत्तीसगढ़ के निर्माण में उद्यमियों की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि छत्तीसगढ़ सरकार हर वर्ग के उत्थान के लिए कार्य कर रही है। व्यापार जगत की बेहतरी और ग्राहकों को लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से जीएसटी दरों में कटौती की गई, जिसका सीधा लाभ जनता को मिल रहा है। जीएसटी रिफॉर्म्स से कई वस्तुओं की कीमत में कमी आई है। जीएसटी की प्रक्रिया को काफी सुगम बनाया गया है। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि छत्तीसगढ़ की नई उद्योग नीति को देश–विदेश में सराहा जा रहा है। लगभग आठ लाख करोड़ से अधिक के निवेश प्रस्ताव हमें प्राप्त हो चुके हैं। हर सेक्टर में हमें ये निवेश प्रस्ताव मिले हैं जिनपर धरातल पर कार्य भी प्रारंभ हो चुका है। प्रदेश में रोजगार सृजन पर हमारा विशेष फोकस है। नई उद्योग नीति में एक हजार से अधिक रोजगार प्रदान करने वाले उद्यमियों को विशेष इंसेंटिव प्रदान करने के प्रावधान किए गए हैं। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि विकसित छत्तीसगढ़ बनाने में रोटरी क्लब और उद्यमियों की भी महत्वपूर्ण भूमिका होगी। रोटरी क्लब उद्यम के साथ ही परोपकार का भी कार्य करता है। क्लब द्वारा किए जा रहे सामाजिक कार्य बहुत प्रशंसनीय हैं। ये बहुत खुशी की बात है कि यह एक्सपो मध्य भारत का सबसे बड़ा एक्सपो है, जिसमें 300 से अधिक स्टॉल हैं। इस विशाल आयोजन का लाभ निश्चित रूप से छत्तीसगढ़ को मिलेगा। रायपुर सांसद बृजमोहन अग्रवाल ने कहा कि मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ तेजी से विकास के पथ पर आगे बढ़ रहा है। छत्तीसगढ़ को लगभग 8 लाख करोड़ के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। ये बहुत खुशी की बात है कि रोटरी क्लब द्वारा आयोजित इस एक्सपो का यह 16वां वर्ष है। रोटरी क्लब सेवा से जुड़ी एक संस्था है। रोटरी क्लब द्वारा पोलियो निर्मूलन के कार्य में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया गया है। मुख्यमंत्री साय ने कार्यक्रम में मोबाइल आई क्लीनिक की एम्बुलेंस का लोकार्पण किया। उन्होंने विभिन्न सेक्टर्स में विशिष्ट योगदान दे रही 25 महिला उद्यमियों को सम्मानित किया और इन महिला उद्यमियों पर केंद्रित पुस्तक का विमोचन भी किया। इस अवसर पर पूर्व प्रधान मुख्य वन संरक्षक राकेश चतुर्वेदी, राम गर्ग सहित रोटरी क्लब ऑफ कॉस्मोपॉलिटन रायपुर के सदस्यगण व बड़ी संख्या में आमजन उपस्थित थे।

डीएम ने अभिया में अस्पताल और पुलिस चौकी के लिए जमीन उपलब्ध कराने का दिया निर्देश

डीएम–एसपी ने 500 असहायों को बांटा कंबल, खिले लोगों के चेहरे
जिला पंचायत सदस्य आशीष सिंह और राकेश वर्मा का अहम सामाजिक सहयोग

बीएनई

भदोही। जनपद के अभिया में शनिवार को सामाजिक सहयोग से 500 गरीबों और असहायों को जिलाधिकारी और पुलिस अधीक्षक ने कंबल का वितरण किया। इस दौरान जिलाधिकारी ने कहा कि यह बॉर्डर का इलाका है। यहाँ अस्पताल और पुलिस चौकी के लिए भदोही उपजिलाधिकारी को जमीन उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया है। जिलाधिकारी ने कहा कि यहां हर वर्ष समाजसेवियों द्वारा कमल का वितरण किया जाता है जिसमें यहां के स्थानीय समाजसेवी, व्यापारी, चिकित्सक जिला पंचायत सदस्य आशीष सिंह और राकेश वर्मा व्यापार मंडल के सहयोग से वितरण होता है। जिलाधिकारी ने कहा कि यह सराहनी पहल है और ठंड में गरीबों को सुरक्षित रखने के लिए यह अच्छी पहल है। उन्होंने कहा कि इस दौरान 500 गरीबों को कंबल का वितरण किया गया है। जिलाधिकारी ने कहा कि यह बॉर्डर का इलाका है और हम इसका निरीक्षण भी करने आए थे और यहां जल्द ही पुलिस चौकी और अस्पताल के लिए जमीन उपलब्ध कराई जाएगी। उपजिलाधिकारी भदोही को हमने निर्देशित कर दिया है। उन्होंने कहा कि आज समाधान दिवस था मैं और आशीष सिंह का सहयोग अहम रहा उन्होंने बातचीत में बताया कि 500 गरीबों के कंबल का वितरण किया गया।वितरण समारोह में सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के प्रदेश महासचिव राकेश वर्मा अभिया व्यापार

पुलिस अधीक्षक सुरियावां थाने पर आए थे और फरियादियों की समस्याओं को निस्तारण भी किया। कंबल वितरण आयोजन समिति के लोगों ने आमंत्रित किया था। यहां आकर बहुत अच्छा लगा और लोगों की तरफ से बेहतर सहयोग देखने को मिला। वितरण समारोह में जिला पंचायत सदस्य मंडल और असीसबी हैंडम क्रिकेट समिति की तरफ से सहयोग प्रदान किया। इस दौरान ग्राम प्रधान अनिल सिंह, महजूदा ग्राम प्रधान राज पांडेय, दिनेश यादव, मोनू मिश्रा, रवि शंकर दुबे, लड्डू दुबे विशाल उपाध्याय, बागी शुक्ला, सिंह, प्रेमचंद वर्मा, सुरेश सेठ समेत अन्य लोग मौजूद रहे।

संक्षिप्त

पीवी सिंधू का मलयेशिया ओपन में सफर समाप्त, सेमीफाइनल में मिली हार

एजेंसी

कुआलालंपुर। दो बार की ओलंपिक पदक विजेता पीवी सिंधू का शानदार अभियान मलयेशिया ओपन के सेमीफाइनल में समाप्त हो गया है। सिंधू को महिला एकल वर्ग में दूसरी वरीयता प्राप्त चीन की वांग झीयी के खिलाफ हार मिली। सिंधू विश्व की दूसरे नंबर की खिलाड़ी के खिलाफ दबाव को नहीं झेल सकीं और उन्होंने कई गलतियां की जिससे उन्हें 16–21, 15–21 से हार का सामना करना पड़ा। भारतीय चुनौती समाप्त पैर की चोट से उबरने के बाद अपना पहला टूर्नामेंट खेल रहीं सिंधू ने दूसरे गेम में 11–6 की बढ़त ली थी, लेकिन इसके बाद वह अपनी लय बरकरार नहीं रख सकीं। सिंधू की हार के साथ ही टूर्नामेंट में भारत की चुनौती समाप्त हो गई है। इससे पहले, क्वार्टर फाइनल में जापान की अकाने यामागुची के चोट के कारण बाहर होने से सिंधू ने सेमीफाइनल में प्रवेश किया था। हालांकि, वह फाइनल में जाने से चूक गईं। सिंधू ने शुरुआत में दी कड़ी चुनौती सिंधू ने शुरुआत में बेहतर रैंकिंग वाली प्रतिद्वंद्वी को कड़ी चुनौती दी। उन्होंने दमदार शॉट्स लगाए और अपनी लंबी पहुंच का प्रभावी उपयोग किया। सिंधू ने चिर–परिचित क्रॉस–कोर्ट स्मैश के दम पर तेजी से 5–2 की बढ़त बना ली, लेकिन वांग की सधी हुई नेट प्ले ने उन्हें लगातार अंक दिलाए और स्कोर बराबर हो गया।

एडिफाई स्कूल के छात्रों ने चोपता में रोमांचक विंटर ट्रेक संपन्न किया

पर्यावरण बचाओ एवं स्वस्थ जीवन अपनाओ का छात्रों ने दिया संदेश

बीएनई

देहरादून। एडिफाई स्कूल के छात्र छात्राओं ने सर्दियों की छुट्टी में कड़ाके की ठंड और बर्फबारी का सामना करते हुए उत्तराखंड के चोपता में पहाड़ियों की चोटी पर चढ़ाई की। छात्रों का विंटर ट्रैक शुक्रवार को संपन्न हुआ एवं आज शनिवार को उनकी वापसी देहरादून हुई। उत्साही छात्रों का एक ग्रुप, अपने स्पोर्ट्स टीचर और फैकल्टी मेंबर्स के साथ, कड़ाके की ठंड और बर्फबारी का सामना करते हुए कई पहाड़ों की चोटियों पर चढ़ाई की। छात्रों ने इन चोटियों पर पर्यावरण बचाओ का संदेश भी दिया एवं प्लास्टिक के बोतल एवं अन्य कूड़ा को वहां से उठाकर नीचे लाए एवं पर्यावरण बचाओ अभियान का हिस्सा बने। इस यादगार यात्रा में छात्रों के साथ स्कूल के डायरेक्टर, एडवोकेट पंकज होलकर भी शामिल हुए, जिन्होंने खुद उदाहरण पेश करते हुए बच्चों के बीच टीमवर्क की भावनाओं को निखारा और स्वस्थ रहने के लिए दिनचर्या में व्यायाम एवं शारीरिक गतिविधियों को बढ़ावा देने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि छात्रों के लिए ऐसी गतिविधियां नियमित रूप से आयोजित होते रहनी चाहिए इससे छात्र–छात्राओं में टीम वर्ग की भावनाओं का विकास होता है और उनके शारीरिक श्रम भी होता रहता है। यहां नियमित स्कूल में जो शिक्षा उन्हें मिलती है उसके अतिरिक्त बहुत कुछ इस आउटडोर एक्टिविटी के अंतर्गत बच्चों को सीखने के लिए मिलता है। हमारे बच्चों ने यहां 3 दिनों तक बर्फ से ढके रास्तों पर ट्रेकिंग की, अपनी सीमाओं को पार किया और रास्ते में ज़िंदगी के अनमोल हुनर छ्सीखे। इस अनुभव ने छात्रों को अपने साथियों के साथ जुड़ने, एक टीम के रूप में मिलकर काम करने और ज़िंदगी भर की यादें बनाने का मौका दिया। यह ट्रेक एडिफाई स्कूल की समग्र शिक्षा के प्रति प्रतिबद्धता का सबूत था, जो क्लासरूम से परे विकास को बढ़ावा देता है।

चावल निर्यातकों को दी बड़ी सौगात, मंडी शुल्क में छूट की अवधि एक साल बढ़ाई गई

इंडिया इंटरनेशनल राइस समिट में मुख्यमंत्री साय ने की घोषणा
ऑर्गेनिक उत्पादों की मांग तेजी से बढ़ रही है- मुख्यमंत्री साय

बीएनई

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय आज राजधानी रायपुर के नीजि रिसॉर्ट में आयोजित इंडिया इंटरनेशनल राइस समिट में शामिल हुए। इस अवसर पर उन्होंने चावल निर्यातकों को बड़ी सौगात दी है। मंडी शुल्क में छूट की अवधि एक साल बढ़ाई है। इंडिया इंटरनेशनल राइस समिट के दौरान सीएम साय ने की घोषणा से चावल निर्यातकों और किसान दोनों के लिए बड़ी सौगात है। साथ ही कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा) के क्षेत्रीय कार्यालय का भी शुभारंभ किया। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में ऑर्गेनिक उत्पादों की मांग तेजी से बढ़ रही है और दंतेवाड़ा में ऑर्गेनिक चावल की खेती हो रही है, जिसे और प्रोत्साहन देने की आवश्यकता है। छत्तीसगढ़ से चावल के एक्सपोर्ट को मिलेगा बढ़ावा मुख्यमंत्री साय ने कहा कि इंडिया इंटरनेशनल राइस समिट का यह दूसरा संस्करण अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस आयोजन में 12 देशों के बायर्स

तथा 6 देशों के एम्बेसी प्रतिनिधिमंडल की उपस्थिति से छत्तीसगढ़ को अंतरराष्ट्रीय पहचान मिलने में मदद मिलेगी। उन्होंने छत्तीसगढ़ की पावन धरती पर सभी विदेशी मेहमानों का स्वागत एवं अभिनंदन किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारे पूर्वजों ने छत्तीसगढ़ को सोच–समझकर "धान का कटोरा" कहा था और आज प्रदेश इस नाम की सार्थकता सिद्ध कर रहा है। चावल छत्तीसगढ़ के खानपान का अभिन्न हिस्सा रहा है और यहां हजारों किस्मों की धान की प्रजातियां उगाई जाती हैं। सरगुजा अंचल के सुगंधित जीराफूल और दुबराज जैसे चावलों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि इनकी खुशबू दूर से ही पहचान में आ जाती है। छत्तीसगढ़ से चावल के एक्सपोर्ट को बढ़ावा मिलेगा। चावल निर्यातक लंबे समय से मंडी शुल्क में छूट की मांग कर रहे थे। पिछले साल भी सरकार ने दी थी, छूट दिसंबर 2025 में मंडी शुल्क में छूट की अवधि खत्म हो रही थी। छत्तीसगढ़ से 90 देशों को करीब एक लाख टन चावल का किया जा रहा है निर्यात मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार की नई औद्योगिक नीति के अंतर्गत लघु उद्योगों को बढ़ावा दिया जा रहा है, जिससे चावल के प्रसंस्करण और निर्यात को मजबूती मिलेगी। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ से वर्तमान में लगभग 90 देशों को करीब एक लाख टन चावल का निर्यात किया जा रहा है।

सरकार निर्यातकों के सहयोग के लिए सदैव तत्पर है। उन्होंने बताया कि प्रदेश में किसानों से 3100 रुपए प्रति क्विंटल की दर से प्रति एकड़ 21 क्विंटल धान की खरीदी की जा रही है। पिछले वर्ष 149 लाख मीट्रिक टन धान की खरीदी हुई थी और इस वर्ष भी खरीदी में वृद्धि की संभावना है। इस दौरान मुख्यमंत्री ने केंद्र व राज्य शासन द्वारा किसानों के हित में संचालित योजनाओं की जानकारी भी साझा की। मुख्यमंत्री ने चावल पर केन्द्रित प्रदर्शनी का किया अवलोकन इंडिया इंटरनेशनल राइस समिट के दौरान मुख्यमंत्री साय ने चावल पर केन्द्रित प्रदर्शनी का अवलोकन किया। उन्होंने विभिन्न किस्मों के चावल, क्षेत्र विशेष में उत्पादित प्रजातियों, चावल उत्पादन में हो रहे नवाचारों तथा आधुनिक तकनीक के माध्यम से उत्पादकता बढ़ाने के प्रयासों की जानकारी ली। मुख्यमंत्री ने शासकीय स्टालों का भी निरीक्षण कर चावल के उत्पादन और विपणन को बढ़ावा देने से जुड़े कार्यों की सराहना की। मुख्यमंत्री ने कहा कि ऐसे नवाचारों से चावल की पैदावार में वृद्धि होगी, जिससे किसानों को सीधा लाभ मिलेगा और प्रदेश की अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिलेगी। इस अवसर पर स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल, मुख्यमंत्री के प्रमुख सचिव सुबोध कुमार सिंह, एपिडा के चेयरमेन अभिषेक देव, छत्तीसगढ़ राइस मिलर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष कांति लाल, राम गर्ग, देश भर से आये मिलर्स, चावल व्यवसायी एवं स्टेक होल्डर्स उपस्थित रहे।

टैरिफ के खतरों के बीच शक्तिकांत दास ने आत्मनिर्भरता को बताया आर्थिक कवच

दिल्ली ब्यूरो

नई दिल्ली। वैश्विक व्यापार में बढ़ते संरक्षणवाद और टैरिफ के मंडराते खतरों के बीच, प्रधानमंत्री के प्रधान सचिव शक्तिकांत दास ने शुक्रवार को कहा कि भारत अब एक ऐतिहासिक बदलाव के मुहाने पर खड़ा है। पहले बिबेक देबरॉय मेमोरियल लेक्चर को संबोधित करते हुए, दास ने जोर देकर कहा कि सरकार की ओर से अपनाई गई नीतियों और सुधारों के कारण भारत इनक्रेडिबल इंडिया (अतुल्य भारत) से क्रेडिबल इंडिया (विश्वसनीय भारत) बनने की यात्रा पर अग्रसर है। आत्मनिर्भरता का देश के लिए क्या मतलब? शक्तिकांत दास ने स्पष्ट किया कि पिछले दशकों में वैश्वीकरण को चलाने वाली आम सहमति अब कमजोर पड़ चुकी है और बहुपक्षीय सहयोग कठिन हो गया है। ऐसे परिदृश्य में, भारत ने आत्मनिर्भरता को अपनी नीतियों के मूल सिद्धांत के रूप में अपनाया है। उन्होंने आत्मनिर्भरता की परिभाषा को स्पष्ट करते हुए दो बातों पर जोर दिया। रणनीतिक लचीलापन : यह दुनिया से कटने की नीति नहीं है, बल्कि मुख्य क्षमता और लचीलेपन को बनाने की रणनीति है। घरेलू क्षमता : आर्थिक आत्मनिर्भरता का अर्थ है देश के भीतर महत्वपूर्ण वस्तुओं और तकनीकों के उत्पादन की क्षमता विकसित करना और विदेशी स्रोतों पर अत्यधिक निर्भरता को कम करना। पूर्व आरबीआई गवर्नर ने कहा कि मजबूत घरेलू क्षमताओं वाली आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था विकास को बनाए रखने की शक्ति देती है, जबकि एक स्वायत्त विदेश नीति बाहरी चुनौतियों से निपटने में राष्ट्रीय हितों को सुरक्षित करती है। वैश्विक चुनौतियों पर क्या बोले शक्तिकांत दास? दास का यह बयान ऐसे समय में आया है जब वैश्विक स्तर पर भू–राजनीतिक हवाएं बदल रही हैं। विशेष रूप से, अमेरिका रूसी तेल पर प्रतिबंध विधेयक पर विचार कर रहा है, जिसमें रूस से तेल खरीदने वाले देशों– जिनमें भारत और चीन शामिल हैं– पर 500 प्रतिशत तक टैरिफ लगाने का प्रावधान हो सकता है।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक **धर्मेन्द्र सिंह** द्वारा शौर्य प्रिंटर्स, शिवपुरी कालोनी, निकट बांसमण्डी चौराहा, लखनऊ से मुद्रित तथा एमआईजी-47, सेक्टर-ई, अलीगंज, लखनऊ (उ.प्र.) से प्रकाशित
सम्पादक-अंजू सिंह (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा) Email-lkojunction@gmail.com. RNI NO.-UPHIN/2015/64743